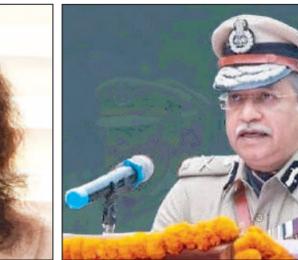


03 5 किलोमीटर लंबी कतार का 3 लाख से अधिक लोगों ने किया भरपूर स्वागत 06 रोजगार संकट: अकादमी और उद्योग के बीच सहयोग पर पुनर्विचार 08 पत्रकार सुरक्षा कानून की मांग तेज - झारखंड में प्रस्ताव पेश करने की अपील

## दिल्ली परिवहन आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त और प्रवर्तन शाखा (दिल्ली यातायात पुलिस और परिवहन विभाग) के कारण दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली के आदेश दरकिनार



### संजय बाटला

सड़को पर लगने वाले जाम, दुर्घटनाओं और असुरक्षा से दिल्ली की सड़कों को मुक्त करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 31 जुलाई 2014 को उच्च न्यायालय द्वारा आदेश जारी किया गया था और दिसम्बर 2014 को उपराज्यपाल दिल्ली ने 236 सड़कों की सूची जारी कर घोषणा के माध्यम से उन सड़कों पर ई-रिक्शा चलाने पर प्रतिबंध लगाया था जो दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के अनुरूप सार्वजनिक सुरक्षा और यातायात नियंत्रण के लिए निर्धारित की गई थी पर दिल्ली में प्रवर्तन शाखाओं ने उसे दरकिनार कर रखा है और परिवहन विभाग के आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त भी बैठे हैं सब कुछ देखते हुए चुप आखिर क्यों ?

आपकी जानकारी हेतु बता दें की दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल द्वारा जारी घोषणा के खिलाफ कई लोगों ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी पर दिल्ली की सड़कों पर सुरक्षा और यातायात नियंत्रण को मद्देनजर रखते हुए उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा पर पाबंदियां लागू रखी

### अब आप को बताते हैं इन 236 सड़कों की नियोजन और वर्गीकरण के मानदंड क्या थे ?

दिल्ली में ई-रिक्शा पर लगी रोक के तहत 236 सड़कों की सूची बनाते समय नियोजन और वर्गीकरण के मुख्य मानदंड निम्न थे:

सुरक्षा और प्रमुख मार्गों का ध्यान सूची में शामिल सड़कों वे थीं जो मुख्य यातायात के मार्ग, वीआईपी क्षेत्र, और

संवेदनशील स्थलों से गुजरती थीं जैसे कि बाराखंबा रोड, राजपथ, तिलक मार्ग, आदि। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन क्षेत्रों में सार्वजनिक और सरकारी सुरक्षा बाधित न हो, वहां ई-रिक्शाओं के चलने पर प्रतिबंध लगाया गया।

ट्रैफिक प्रबंधन जिन सड़कों पर यातायात का दबाव अधिक था या जहां भारी वाहन और तेज गति से वाहन चलते हैं, उन पर ई-रिक्शाओं की अनुमति नहीं दी गई क्योंकि उनकी धीमी गति ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं का कारण बन सकती थी।

पब्लिक सेफ्टी और नियम पालन वे सड़कें चयनित की गईं जहां ई-रिक्शा संचालक नियमों का उल्लंघन करते पाए गए या जैसे कोई उचित कानूनी पंजीकरण, हेलमेट पालन, और यातायात नियमों का पालन न हो।

संवेदनशील और प्रशासनिक क्षेत्र दिल्ली के प्रशासनिक, सरकारी और इतिहासिक क्षेत्रों को विशेष सुरक्षा के तहत रखा गया, जिनमें ई-रिक्शाओं को प्रतिबंधित किया गया ताकि सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था बाधित न हो।

ये मानदंड दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल के निर्देशों के परिप्रेक्ष्य में तय किए गए थे, ताकि राजधानी में ट्रैफिक और सुरक्षा की उचित व्यवस्था बनाई जा सके।

### अब आप को बताते हैं इन प्रतिबंधों के खिलाफ कौन से कानूनी कदम उठाए गए थे

दिल्ली में ई-रिक्शा प्रतिबंध के खिलाफ कई कानूनी कदम उठाए गए थे। प्रमुख कानूनी कार्रवाई में एक जनहित



याचिका (PIL) शामिल थी, जिसे सामाजिक कार्यकर्ता शहनवाज खान ने दायर किया था। इस याचिका में ई-रिक्शाओं को बिना पंजीकरण और लाइसेंस के चलाने को असंवैधानिक और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा बताया गया था। इस याचिका पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2014 में ई-रिक्शाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था। ई-रिक्शा ऑपरेटरों और अन्य पक्षों ने इस प्रतिबंध की समीक्षा याचिका दायर की थी, जिसमें सरकार के द्वारा बनाए गए अंतरिम दिशानिर्देशों के तहत ई-रिक्शा चलाने की अनुमति मांगी गई थी, लेकिन उच्च न्यायालय ने अपने फैसले को बरकरार रखा था और कहा कि वर्तमान नियमों के तहत ये वाहन अवैध हैं जब तक केंद्र सरकार इनके संचालन के लिए कानून नहीं बनाती।

इसके अतिरिक्त, कई ई-रिक्शा चालक और उनके संगठन इस प्रतिबंध के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ते रहे, और

समय-समय पर दिल्ली सरकार और पुलिस की कार्रवाई के खिलाफ भी दलीलें दी गईं, जिसमें अवैध पंजीकरण, रजिस्ट्रेशन और लाइसेंस के मुद्दे थे।

सारांश में, कानूनी कदम मुख्यतः याचिकाओं और अदालतों में संगठित विरोध के रूप में उठाए गए, जो ई-रिक्शा के संचालन के नियमों और प्रतिबंधों को चुनौती देते थे, लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय ने सुरक्षा और ट्रैफिक प्रबंधन कारणों से प्रतिबंध को लागू रखा।

### अब आपको बताते हैं ई-रिक्शा को दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़कों पर चलने से रोका और कब

ई-रिक्शा को दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़कों पर चलने से रोका और कब दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली द्वारा ई-रिक्शाओं को राजधानी की 236 सड़कों पर चलने से रोका गया था,

जिसमें मुख्य रूप से वीआईपी और प्रमुख मार्ग शामिल हैं। यह रोक 2014 में अधिसूचित की गई, जब लि. गवर्नर नजीब जंग के अनुमोदन के बाद दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग ने नोटिफिकेशन जारी किया था।

किन सड़कों पर रोक लगी? यह प्रतिबंधित सड़कों की सूची दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है, विशेष रूप से: - \*नई दिल्ली: \* 77 सड़कें, जैसे बाराखंबा रोड, तिलक मार्ग, राजपथ, अशोक रोड, तुगलक रोड, शाहजहाँ रोड, रफी मार्ग, फिरोजशाह रोड, संसद मार्ग, और औरोरा जेब रोड।

\* साउथ दिल्ली: \* 38 मार्ग, जैसे लाला लाजपत राय मार्ग, ओरोबिंदो मार्ग, लोधी रोड, RTR, नेल्सन मंडेला मार्ग, सीरी फोर्ट रोड, NH-8, अरुणा आसफ अली रोड।

\* ईस्ट दिल्ली: \* विकास मार्ग, यूपी लिंक रोड, शकपुर चौक से मदन डेयरी रोड, पुस्ता रोड, जोती रोड, लोनी रोड।

\* वेस्ट दिल्ली: \* जेल रोड, आउटर रिंग रोड, पायल सिनेमा रोड, मायापुरी रोड।

\* नॉर्थ-ईस्ट, साउथ-वेस्ट, नॉर्थ आदि: \* इन जिलों की कुछ विशेष सड़कें भी सूचीबद्ध थीं, जैसे रिंग रोड, कैप्टन गौर मार्ग, मथुरा रोड।

कब लगी रोक? दिल्ली उच्च न्यायालय ने 31 जुलाई 2014 को आदेश दिया था कि ई-रिक्शा "पब्लिक सेफ्टी" को देखते हुए बैन किए जाएं। इसके बाद दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल ने 10-11 दिसंबर 2014 को 236 सड़कों के लिए नोटिफिकेशन जारी किया।

जब यह रोक दिल्ली के सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक और नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लगाई गई थी, क्योंकि बिना नियमों के ई-रिक्शाओं का संचालन खतरनाक माना गया था।

इन प्रतिबंधों का उद्देश्य मुख्य यातायात मार्गों, वीआईपी क्षेत्रों और संवेदनशील जंक्शनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और फैसलों का सार प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसलों का सार निम्न है: याचिकाकर्ताओं के तर्क याचिकाकर्ताओं ने मुख्य रूप से यह तर्क दिया कि ई-रिक्शा गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए आवश्यक सार्वजनिक परिवहन का साधन हैं, जिससे रोजगार और सामान्य दुलाई का भी जरिया है। उन्होंने कहा कि ई-रिक्शा संचालन पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया संवैधानिक अधिकारों और स्थानीय लोगों के आजीविका के अधिकार के विरुद्ध है। याचिकाकर्ताओं ने केंद्र और राज्य

सरकारों से ई-रिक्शाओं के लिए नियमन और पंजीकरण का उचित कानून बनाने की मांग की, ताकि उनका सुरक्षित और नियंत्रित संचालन हो सके। यह भी तर्क दिया गया कि प्रतिबंध लगाने से आम जनता को आर्थिक और यात्रा में भारी कठिनाई होती है। उच्च न्यायालय के फैसलों का सार दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस पर बल दिया कि ई-रिक्शा सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात की जाम तथा नियमों के उल्लंघन के कारण खतरनाक साबित हो रहे थे। अदालत ने कहा कि जब तक ई-रिक्शा के लिए उपयुक्त रूप से नियम और मानक न बनें, तब तक बिना नियंत्रण के उनका संचालन शहर के लिए खतरा है। न्यायालय ने ई-रिक्शाओं को 236 प्रमुख और संवेदनशील सड़कों पर चलने से प्रतिबंधित कर दिया और इसे सार्वजनिक हित में आवश्यक माना। अदालत ने सरकारों को निर्देश दिया कि वे ई-रिक्शा संचालन के लिए कड़े सुरक्षा और पंजीकरण नियम बनाएं।

निष्कर्ष याचिकाकर्ताओं का उद्देश्य था ई-रिक्शा को पकड़ा जाना या पूरी तरह प्रतिबंधित होने से बचना, जबकि न्यायालय ने सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक प्रबंधन और नियम पालन को सर्वोपरि रखा। इसलिए, उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा पर पाबंदियां लगाते हुए उन्हें सुरक्षित और नियंत्रित संचालन के लिए पंजीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया।

अब दिल्ली की सड़कों पर ई-रिक्शा के कारण धीमी गति, जाम, दुर्घटनाएं और नुकसान के लिए जन समुदाय किसे जिम्मेदार मानती है स्वयं फैसला करें।

## टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिकी कुंडू महासचिव,

फलदार वृक्ष और गुणवान मनुष्य ही झुकते हैं, सुखी लकड़ी या मूख मनुष्य कभी नहीं झुकते... इंसान को अपना स्वभाव, विचार, आचरण, व्यवहार, नजर एवं नीयत शुद्ध एवं साफ रखनी चाहिए. इसलिए छल, कपट और पाप उतना ही करना चाहिए जितना भुगतने की शक्ति हो, अन्यथा उसका समाज, समुदाय, संगठन आदि से त्रिस्कार संभव है इसलिए जिसकी फितरत हमेशा बदलने की हो वह कभी भी किसी का नहीं हो सकता, चाहे वह समय हो या इंसान..

<https://tolwa.com/about.html>  
tolwadelhi@gmail.com  
tolwaindia@gmail.com



## सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ जनता उतरी सड़कों पर, मुद्दे में है दम सुप्रीम कोर्ट को करना चाहिए पुनः विचार

नवदीप सिंह

सिर्फ एक ही मांग अपना आदेश वापिस लो, राजीरी गार्डन में जनता ने जो इल्जाम मीडिया के आगे सरकार, व्यापारियों के खिलाफ लगाए उसे सुन मीडिया भी रह गई चुप कहीं ना कहीं सरकार की नाकामी नजर आई साफ किया बड़ा सवाल क्या कुत्ते बिना कारण किसी को काटते हैं, क्या एमपीडी को जो पैसा दिया था उसका हिसाब लेने में हिचक रहा कोर्ट क्या अब कुत्ते के मास का भी करोगे इंपोर्ट क्या कुत्ते के खून को भी अब बेवोगे इत्यादि कहीं ऐसे सवाल जिनका जवाब सच में जनता को मिलना ही चाहिए और सुप्रीम कोर्ट को अपने फैसले पर करना चाहिए पुनः विचार।



## मिंटो रोड कालीबाड़ी समिति ने 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर किया भव्य आयोजन

पिकी कुंडू, सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश

दिल्ली की सर्वाधिक प्राचीन एवं प्रतिष्ठित सांस्कृतिक-सामाजिक संस्थाओं में से एक, मिंटो रोड पूजा समिति, जिसकी स्थापना वर्ष 1940 में हुई थी, ने आज "वंदे मातरम" के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का सफल आयोजन किया।

यह आयोजन रविवार, 9 नवम्बर 2025 को काली मंदिर, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग परिसर में सम्पन्न हुआ, जिसमें समाज के गणमान्य सदस्य, सांस्कृतिक कलाकार तथा श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ वंदे मातरम के भावपूर्ण गायन से हुआ, जिसके पश्चात् गीत के ऐतिहासिक महत्व और भारत के स्वाधीनता संग्राम में उसकी प्रेरणादायी भूमिका पर वक्तव्य प्रस्तुत किए गए।

इस अवसर पर श्री दीपक मुखोपाध्याय, अध्यक्ष - मिंटो रोड पूजा समिति ने कहा: > "वंदे मातरम आज भी भारत की अस्मिता, एकता और सांस्कृतिक चेतना का प्रतीक है। यह आयोजन ऋषि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की उस अमर वाणी को हमारी

श्रद्धांजलि है, जिसने भारतवासियों के हृदय में स्वाभिमान और एकता का भाव जगाया।" श्री मुखोपाध्याय ने इस अवसर पर उपस्थित श्री अशोक ठाकुर, निदेशक - नाफेड एवं सर्व प्रकोष्ठ प्रभारी, भाजपा दिल्ली प्रदेश, का विशेष आभार व्यक्त किया। साथ ही उन्होंने श्री किशोर तराफदार, संयोजक - भाजपा दिल्ली बंगाली प्रकोष्ठ, श्री अरुण मुखर्जी, सह-संयोजक तथा भाजपा दिल्ली बंगाली प्रकोष्ठ एवं अखिल भारतीय बंगाली परिषद के अन्य पदाधिकारियों और सदस्यों का भी स्वागत किया।

अपने संबोधन में श्री अशोक ठाकुर ने कहा कि मिंटो रोड कालीबाड़ी लगभग एक शताब्दी से दिल्ली के मध्य में सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का सशक्त केंद्र रहा है, जिसने समाजसेवा और परंपरा-संरक्षण की गौरवशाली परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाया है। उन्होंने यह भी कहा कि ऋषि बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित वंदे मातरम ने औपनिवेशिक युग के आर्थिक काल में स्वाधीनता आंदोलन की चेतना को जन्म दिया और जब कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इसे स्वरबद्ध किया, तब यह गीत राष्ट्र की आत्मा का स्वर बन गया।



# स्वास्थ्य विशेष

## स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

### अदरक - बेजोड़ लाभ

क्या आपने गौर किया है कि हर भारतीय रसोई की मसाला डिब्बी में अदरक (Ginger) अवश्य मौजूद होती है? चाय का स्वाद बढ़ाने से लेकर हर मौसम में शरीर को रोगों से बचाने तक, अदरक का महत्व अपार है। आयुर्वेद में अदरक को 'विश्वभेषज' यानी संपूर्ण रोगों का औषधि कहा गया है। यह न केवल स्वाद और सुगंध का खजाना है, बल्कि औषधीय दृष्टि से भी बेहद खास है।

**अदरक में पाए जाने वाले उपयोगी तत्व**  
अदरक का वैज्ञानिक नाम Zingiber officinale है। इसके कंद (Rhizome) में अनेक सक्रिय तत्व पाए जाते हैं, जिनमें प्रमुख हैं:

जिंजरॉल (Gingerol): सूजन कम करने और दर्दनिवारण में सहायक।

शोगॉल (Shogaol): एंटीऑक्सिडेंट और पाचन में सहायक।

जिंजरोन (Zingerone): स्वाद, सुगंध और रोगाणुनाशक।

एसेंशियल ऑयल: श्वसन और पाचन तंत्र को संतुलित करते हैं।

खनिज व विटामिन: मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, पोटेशियम, विटामिन C और B6।

यही तत्व अदरक को इतना ताकतवर और उपयोगी बनाते हैं।

**घरेलू नुस्खों में अदरक के उपयोग**  
अदरक का इस्तेमाल प्राचीन काल से ही घरेलू चिकित्सा में होता आ रहा है। कुछ लोकप्रिय और प्रमाणित उपाय इस प्रकार हैं:

**खांसी-जुकाम में राहत:**  
अदरक का रस + शहद = गले की खराश, खांसी और कफ को तुरंत शांत करता है।

अदरक की चाय ठंड और बुखार में असरदार है।

**पाचन शक्ति बढ़ाने में:**  
खाने से पहले चुटकी भर सेंधा नमक के साथ अदरक का छोटा टुकड़ा चबाने से भूख खुलती है और पाचन सुधरता है।

**मतली और उल्टी में लाभकारी:**  
गर्भावस्था के दौरान मॉर्निंगसिकनेस या यात्रा के समय उल्टी की समस्या में अदरक का सेवन कारगर

है।  
**जोड़ों और मांसपेशियों के दर्द में:**  
अदरक को तेल या पेस्ट लगाने से सूजन और दर्द कम होता है।

**ब्लड सर्कुलेशन और हृदय स्वास्थ्य में:**  
अदरक को नियमित सेवन रक्त को पतला कर थक्के बनने से रोकता है और हृदय को स्वस्थ रखता है।

**आयुर्वेदिक दृष्टिकोण**  
आयुर्वेद में अदरक को 'अमृततुल्य' माना गया है। यह वात, कफ और पित्त - तीनों दोषों को संतुलित करने में मदद करता है।

**सूट (सूखा अदरक):** कफ और वात रोगों में श्रेष्ठ।

ताजा अदरक: पाचन शक्ति और अग्नि (जटरग्नि) बढ़ाता है।

**आयुर्वेदिक ग्रंथों में कहा गया है:**  
"अदरक भोजन का अमृत है, जो भूख और पाचन दोनों को संतुलित रखता है।"

अदरक सेवन करने के तरीके

**अदरक की चाय**  
सुबह अदरक वाली चाय शरीर को ऊर्जा देती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है।

**अदरक का काढ़ा**  
अदरक को कढ़कस कर एक गिलास पानी में डालकर उबालें। पानी आधा रहने पर छान कर पी लें। प्रतिदिन सेवन से यह काढ़ा किडनी की सफाई करके किडनी को पुनर्जीवित कर देगा।

**अदरक का पानी**  
गुनगुने पानी में अदरक का रस डालकर पीना शरीर से विषैले तत्वों को बाहर करता है।

**अदरक का अचार**  
भोजन के साथ अदरक का अचार पाचन में सहायक है और स्वाद भी बढ़ाता है।

**अदरक पाउडर (सूट)**  
दूध में मिलाकर पीने से सर्दी-जुकाम और जोड़ों का दर्द कम होता है।

**अदरक-नींबू-शहद मिश्रण**  
यह इम्यूनिटी बढ़ाने का प्राकृतिक टॉनिक है।



अदरक में gingerol और shogaol यौगिक पाए जाते हैं, जो सूजन और दर्द को कम करने में उतने ही असरदार पाए गए हैं जितने कुछ हल्के painkillers।

**समुद्री बीमारी और उल्टी पर असरदार**  
NASA ने अंतरिक्ष यात्रियों पर शोध किया और पाया कि अदरक motion sickness और उल्टी रोकने में दवाओं जितना असरदार है।

**खून को पतला करने वाला असर**  
अदरक प्राकृतिक रूप से खून को पतला करता है और ब्लड क्लॉट बनने से रोक सकता है - यही कारण है कि इसे natural aspirin भी कहा जाता है।

**कैंसर रिसर्च में संभावनाएं**  
अदरक के सक्रिय तत्व gingerol पर अध्ययन बताते हैं कि यह colon, ovarian और pancreatic cancer cells की growth को धीमा कर सकता है।

**थर्मोजेनिक फूड**  
अदरक शरीर के मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है और

केलोरी बर्न करने में मदद करता है। इसी वजह से इसे वजन घटाने वाली डाइट्स में शामिल किया जाता है।

**जोड़ों के लिए एंटीऑक्सिडेंट**  
लागातार सेवन से osteoarthritis और rheumatoid arthritis में सूजन और stiffness कम होती है।

**एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल**  
अदरक की चाय सिर्फ गले की खराश ही नहीं, बल्कि E. coli और RSV virus जैसे संक्रमणों पर भी असर दिखाती है।

**दिल की धड़कन को स्थिर करने में मदद**  
अदरक arrhythmia (अनियमित धड़कन) को सुधारने की क्षमता रखता है, हालांकि यह अभी शोध का विषय है।

**फर्टिलिटी पर असर**  
आयुर्वेद और कुछ आधुनिक अध्ययनों के अनुसार अदरक शुक्राणुओं की गतिशीलता (motility) बढ़ाने में सहायक हो सकता है।

**पेट के एसिड को नियंत्रित करने वाला**

अदरक पाचन अग्नि को तेज करता है, लेकिन paradoxically यह acid reflux और gastritis को भी शांत करता है।

**ध्यान देने योग्य बातें**

1. अदरक का सेवन संतुलित मात्रा में ही करें।

2. जिन लोगों को पित्त प्रकृति अधिक है या जिन्हें एसिडिटी की समस्या रहती है, उन्हें अदरक का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए।

3. ब्लड थिनर दवा लेने वाले मरीज चिकित्सक की सलाह के बिना अदरक का अधिक सेवन न करें।

**निष्कर्ष:-** अदरक कोई साधारण मसाला नहीं, बल्कि हर घर का औषधीय खजाना है। यह पाचन से लेकर श्वसन, दर्द से लेकर रोग प्रतिरोधक क्षमता तक - शरीर के हर अंग के लिए लाभकारी है। आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान दोनों ने इसके गुणों को स्वीकार किया है। अगर आप प्रतिदिन थोड़ा सा अदरक अपने भोजन या पेय में शामिल करें, तो यह आपकी सेहत को लंबे समय तक सुरक्षित रखेगा।

### दिएं गए सुझावों को अपनाकर आप अपने स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं और कई बीमारियों से बच सकते हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं:

- सेहतमंद आहार: सेन्धा नमक, तिल का तेल, सरसों का तेल, मूंगफली का तेल, नारियल का तेल जैसे स्वस्थ विकल्पों का उपयोग करें।
- रसोई में सावधानी: एल्यूमिनियम और प्लास्टिक के बर्तनों का उपयोग न करें, स्टील के बर्तन उपयोग करें।
- देशी गाय का घी: देशी गाय के घी का उपयोग करने से अनेक रोग दूर हो सकते हैं।
- नियमित भोजन: भोजन का समय निश्चित करें, पेट ठीक रहेगा।
- अंकुरित अन्न: नाश्ते में अंकुरित अन्न शामिल करें, पोषक विटामिन और फाइबर मिलेंगे।
- देशी दही: सुबह के खाने के साथ देशी गाय के दूध का बना ताजा दही लें, पेट ठीक रहेगा।
- चीनी का कम उपयोग: चीनी का कम उपयोग करें, ज्यादा उम्र में हड्डियाँ ठीक रहेंगी।
- नियमित व्यायाम और स्वच्छता: नियमित व्यायाम करें और स्वच्छता का ध्यान रखें।

इन सुझावों को अपनाकर आप अपने स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं और कई बीमारियों से बच सकते हैं।



### ध्यान एक मानसिक प्रक्रिया

ध्यान एक मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने मन को एक बिंदु पर केंद्रित करता है और अपने विचारों को शांत और स्थिर बनाता है। यह एक प्राचीन प्रथा है जो भारत में हजारों साल पहले शुरू हुई थी और आज भी दुनिया भर में इसका अभ्यास किया जाता है।

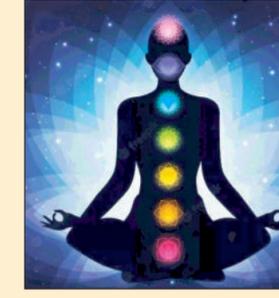
**ध्यान के प्रकार:**

1. **मंत्र ध्यान:** इसमें व्यक्ति एक मंत्र या शब्द को बार-बार दोहराता है।
2. **स्वासा ध्यान:** इसमें व्यक्ति अपने स्वास पर ध्यान केंद्रित करता है।
3. **विशुद्धता ध्यान:** इसमें व्यक्ति अपने मन में एक छवि या दृश्य को देखता है।
4. **बौद्ध ध्यान:** इसमें व्यक्ति अपने शरीर के विभिन्न भागों पर ध्यान केंद्रित करता है।
5. **मार्ड्ज्फुलनेस ध्यान:** इसमें व्यक्ति अपने विचारों और भावनाओं को बिना निर्धार के देखता है।

**ध्यान के लाभ:**

1. तनाव और चिंता कम करना
2. एकाग्रता और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ाना
3. आत्म-जागरूकता और आत्म-खोज बढ़ाना
4. नींद की गुणवत्ता में सुधार करना
5. रक्तचाप और हृदय रोग के जोखिम को कम करना

ध्यान करने के तरीके:



1. \*\*सुबह जल्दी या रात को सोने से पहले ध्यान करें।
2. \*\*एक शांत और आरामदायक स्थान चुनें।
3. \*\*आँखें बंद करें और अपने स्वास पर ध्यान केंद्रित करें।
4. \*\*एक मंत्र या शब्द को बार-बार दोहराएं।
5. \*\*अपने मन को शांत और स्थिर बनाने का प्रयास करें।

ध्यान एक शक्तिशाली औजार है जो व्यक्ति को अपने मन और शरीर को स्वस्थ और संतुलित बनाने में मदद कर सकता है।

### “पैर — शरीर का मौन दर्पण” “पैरों की जुबान — सेहत का आईना”

हम अक्सर पैरों की चमक, बालों की मजबूती या दर्जन पर ध्यान देते हैं, पर हमारे पैर — जो हमें जीवन भर उठाए रखते हैं, सबसे अधिक अनदेखे रहते हैं।

यही पैर कभी-कभी हमारे शरीर की अदृश्य कमी और छिपी हुई बीमारियों के संकेत भी देते हैं। दरअसल, पैरों की स्थिति आपके पोषण स्तर और रक्त संसार का सटीक प्रतिबिंब है।

1. **फटी एड़ियाँ** — सूखी त्वचा नहीं, पोषण की पुकार यदि एड़ियाँ बार-बार फटती हैं, तो यह केवल सूखेपन का मामला नहीं। यह संकेत है कि शरीर में विटामिन C, विटामिन E या ओमेगा-3 फटी एड़ियों की कमी है। ये तत्व त्वचा को लचीला, कोमल और घाव-प्रतिरोधक बनाते हैं।
2. **आयुर्वेद, संतरा, शिमला मिर्च (विटामिन C), बादाम, सुरमूखी बीज (विटामिन E), अलसी, मछली (ओमेगा-3)।**
3. **अननस या सुन्तल —** तंत्रिकाओं का SOS संकेत यदि पैरों में 'हुई चुनने' जैसी अनुभूति होती है, तो यह विटामिन B12 और B6 की कमी का परिणाम हो सकता है। ये दोनों विटामिन तंत्रिकाओं को सुरक्षा परत (Myelin Sheath) बनाते हैं।
4. **आयुर्वेद, दही, अंडा, मछली (B12) दूध, दूधिया, सैल्फन (B6)।** शाकाहारी लोग चिकित्सक से B12 सप्लीमेंट लें।



3. **ल्लेशा ठंडे पैर** — लौह (Iron) की कमी का संकेत यदि गर्म नौसम में भी पैर ठंडे रहते हैं, तो संभवतः रक्त में ऑक्सीजन पहुँचाने वाला ग्लोबिन (लौह) कम है। इससे शरीर पहले गर्मत्वपूर्ण अंगों को रक्त भेजता है, पैर ठंडे पड़ जाते हैं।
4. **आयुर्वेद, दही, अंडा, मछली (Heme iron)।** आयुर्वेद के साथ संतरा या नींबू का रस लें, ताकि अवशोषण बढ़े।



4. **पैरों में ऐडन** — खनिजों की कमी का परिणाम रात में अचानक ऐडन या दर्द लेना शरीर की 'मिनरल क्राय' है। यह मैग्नीशियम, कैल्शियम, पोटेशियम की कमी से होता है।
5. **आयुर्वेद, केला, शकरकंद (पोटेशियम), दही, हरी सांजियाँ (कैल्शियम), बादाम, एडोकांडा (मैग्नीशियम)।**

बायोटिन (B7) या जिंक (Zinc) की कमी दर्शाता है।  
उपाय: अंडा, साबुत अनाज, मैदे (बायोटिन), कढ़ के बीज, नूतफली, बीक (जिंक)।  
6. **सूजे हुए या दर्द वाले जोड़ों के पैर** — विटामिन D की कमी पैरों के जोड़ों को सुजाने या दर्द करवाती है, तो यह विटामिन D की कमी से छिपे हुए जोड़ों की कोमलता (Osteomalacia) का संकेत हो सकता है। साथ ही यह शरीर में सूजन भी बढ़ा देता है।  
उपाय: सुबह की धूप लें, मछली, अंडे की जर्दी, फोर्टिफाइड दूध लें।  
7. **सक्रिय पैर देखना** — जीवन भर की यात्रा का रस्य श्रेष्ठ जूते पहनें जो पैर को ससरा दें, रोज़ धोकर सुखाएँ, मॉडरनाइज करें, कंग्रियों और एड़ियों की रस्की रोज़िंग करें।  
ऐसा करने से आप न केवल पैरों की, बल्कि पूरे शरीर की लंबी उम्र सुनिश्चित करते हैं।  
निष्कर्ष आपके पैर केवल चलने के लिए नहीं हैं वे शरीर के गीतर झीकना है।  
स्वास्थ्य स्वचक "ह, उनके संकेतों को समझना, शरीर के गीतर झीकना है।  
स्वस्थ पैर = स्वस्थ जीवन।  
इसलिए पैर सिर्फ उभरी पर मत रीखए, उन्हें प्रेम, ध्यान और पोषण भी दीजिए।

### जोड़ों की कट-कट और दर्द का रहस्य और उसका आयुर्वेदिक समाधान

कभी-कभी आपको कट-कट की आवाज, बैठने पर घुटनों में दर्द, या सुबह उठते ही कमर और गर्दन में जकड़न महसूस होती है? तो समझिए — शरीर आपको संधि दोष (Joint Imbalance) का संकेत दे रहा है।

कारण क्या है? आयुर्वेद के अनुसार, यह सब "वात दोष" के बढ़ने से होता है। जब वात असंतुलित हो जाता है, तो वह जोड़ों के स्नेह (lubrication) को सुखा देता है — यही कारण है कि शरीर में कट-कट, दर्द और अकड़न महसूस होती है।

**लक्षण**

1. कमर, गर्दन और घुटनों में दर्द
  2. शरीर झुकाने पर आवाज आना
  3. चलने-फिरने में जकड़न
  4. सोड़ियों चढ़ते समय घुटनों में जलन या कमजोरी
  5. थकान या कमजोरी महसूस होना
- आयुर्वेदिक दवा और उपाय**
1. योगराज गुग्गुलु वात दोष को शांत करता है, संधियों में स्नेह (oiliness) बढ़ाता है।  
सेवन विधि 2-2 गोली दिन में दो बार गुनगुने पानी से भोजन के बाद।
  2. महारासनादि काढ़ा नसों और जोड़ों की जकड़न को दूर करता है, रक्तसंचार सुधरता है।  
सेवन विधि 2 चम्मच काढ़ा बराबर गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में 2 बार।
  3. अश्रगांधा चूर्ण + शुद्ध शिलाजीत यह संयोजन जोड़ों को मजबूती और नई ऊर्जा देता है।  
सेवन विधि 1 चम्मच अश्रगांधा + 1 चुटकी शिलाजीत, दूध के साथ रात में सोने से पहले।
  4. संधिवात तेल या महाबल तेल से मालिश रोज सुबह-शाम हल्के हाथों से दर्द वाले स्थान पर 10 मिनट तक मालिश करें। फिर हल्का गुनगुना पानी से स्नान करें।
- भोजन और जीवनशैली**
1. ठंडी चीजें (ठंडा पानी, बर्फ, ठंडी दही) से

### जोड़ों की कट-कट और दर्द का रहस्य — और उसका आयुर्वेदिक समाधान



1. इन्हें बराबर मात्रा में पीसकर रोज 1 चम्मच गुनगुने पानी से लें। इससे जोड़ों में तेलीयता बढ़ती है और दर्द में प्राकृतिक आराम मिलता है।  
आयुर्वेद कहता है — "जहाँ स्नेह है, वहाँ स्थिरता है।" इसलिए शरीर को तेल, विभ्राम और सही आहार दें। कट-कट की आवाज भी शांत होगी और जीवन फिर से लचीला और स्फूर्तिदायक बनेगा।  
**आयुर्वेद अपनाएँ स्वस्थ जीवन पाएँ....**

### “केफिर — अलसी आंत्र शुद्धि: शरीर को भीतर से स्वच्छ करने का प्राकृतिक उपाय”



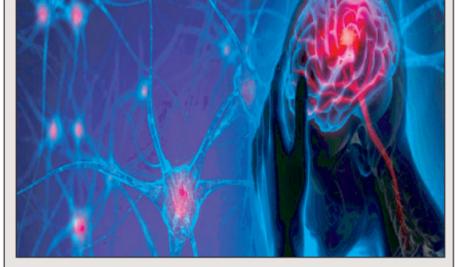
**आज के युग में**, जब हमारा भोजन अधिकतर प्रसंस्कृत (processed) और कृत्रिम बन चुका है, हमारी आंतों में विषैले अपशिष्ट (toxins) जमा हो जाते हैं। यह गंदगी पाचन तंत्र को कमजोर करती है और पोषक तत्वों के अवशोषण में बाधा डालती है। शरीर को भीतर से शुद्ध करने का एक सरल और प्रभावी प्राकृतिक तरीका है — केफिर (Kefir) और अलसी (Flaxseed) का संयोजन।

केफिर एक किण्वित (fermented) दूध पेय है जिसमें प्राकृतिक प्रोबायोटिक्स पाए जाते हैं। यह आंतों की स्वस्थ जीवाणु-संख्या को बढ़ाता है, पाचन में सुधार लाता है और प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है। वहीं अलसी में फाइबर (fiber) और ओमेगा-3 फैटी अम्ल प्रचुर मात्रा में होते हैं जो मल त्याग को नियमित करते हैं और शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालते हैं। दोनों का मिश्रण आंतों को सफाई के लिए अत्यंत लाभकारी है।

यह डिटॉक्स तीन चरणों (phases) में किया जाता है —

- पहला चरण: 1 चम्मच अलसी का आटा + 100 मिली केफिर, सात दिन तक नाश्ते में लें।
  - दूसरा चरण: 2 चम्मच अलसी का आटा + 100 मिली केफिर, अगले सात दिन तक लें।
  - तीसरा चरण: 3 चम्मच अलसी का आटा + 150 मिली केफिर, अंतिम सात दिन तक लें।
- इस दौरान पर्याप्त मात्रा में पानी (कम से कम आठ गिलास प्रतिदिन) पीना और आधे घंटे की हल्की सैर करना बेहद आवश्यक है। यह प्रक्रिया साल में एक बार ही करनी चाहिए ताकि शरीर पर अतिरिक्त दबाव न पड़े।
- केवल तीन सप्ताह में यह प्राकृतिक तंत्र शरीर से कई पाउंड तक अपशिष्ट निकाल सकता है, जिससे शरीर हल्का, ऊर्जावान और स्वस्थ महसूस करता है। यह न केवल आंतों की सफाई करती है, बल्कि पाचन, मेटाबॉलिज्म और संपूर्ण स्वास्थ्य में सुधार लाती है।
- सच तो यह है कि स्वस्थ जीवन की शुरुआत भीतर से होती है, और प्रकृति के सरल उपाय ही हमें उस दिशा में ले जाते हैं।

### “मस्तिष्क की शक्ति लौट सकती है — यदि ऊर्जा और सुरक्षा साथ हों।”



**अल्जाइमर रोग** का मुख्य कारण मस्तिष्क कोशिकाओं की ऊर्जा की कमी (GTP घट जाना) और ऑक्सिडेटिव तनाव यानी "सेल जंग"। इससे अमाइलॉयड प्लाक्स व टाऊ टेंग्लस बनकर स्मृति मिटाने लगते हैं।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की नई खोज ने दो सरल योगियों में आशा दिखाई

1. निकोटिनामाइड (Vitamin B3) NAD बढ़ाता है, जिससे GTP व ऊर्जा पुनः बनती है।\*
2. EGCG (ग्रीन टी का प्रमुख एंटीऑक्सिडेंट) "सेल जंग" घटाता है व Nrf2 मार्ग सक्रिय कर कोशिकाओं की रक्षा बढ़ाता है।

जब दोनों को साथ प्रयोग किया गया (प्रयोगशाला में चूहों की मस्तिष्क कोशिकाओं पर):

1. ऊर्जा प्रणाली पुनः चालू हुई,
2. ऑक्सिडेटिव नुकसान घटा,
3. Autophagy (कोशिकीय सफाई प्रक्रिया) सक्रिय हुई,
4. अमाइलॉयड प्लाक्स साफ़ हुए,
5. न्यूरोन्स लंबे समय तक जीवित रहे।

यह अद्भुत "सिनर्जी" (समन्वय शक्ति) थी — B3 ने ईंधन दिया, EGCG ने सुरक्षा दी।

लेकिन यह केवल प्रयोगशाला स्तर की सफलता है — मानव में नहीं। मौखिक सेवन से ये पदार्थ मस्तिष्क तक पर्याप्त मात्रा में नहीं पहुँचते। इसलिए शोध जारी है।

फिलहाल मस्तिष्क की रक्षा के श्रेष्ठ उपाय हैं: संतुलित आहार, हर दिन चलना, गहरी नींद, सामाजिक सक्रियता, और अपने चिकित्सक से सलाह लेकर ही कोई सप्लीमेंट लें।

असली इलाज संयम, संतुलन और जागरूकता में है — न कि शीशी में।

## प्रदूषण के खिलाफ इंडिया गेट पर प्रोटेस्ट, पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया

दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ लोगों ने इंडिया गेट पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया, लेकिन बाद में छोड़ दिया। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि प्रदूषण के आंकड़े गलत हैं और सरकार कोई ठोस कदम नहीं उठा रही है। वे साफ हवा में सांस लेने के अधिकार की मांग कर रहे हैं और सरकार की निष्क्रियता से निराश हैं। 'हेल्पअसब्रीद' हैशटैग के साथ नागरिक समूहों ने विरोध प्रदर्शन किया, जिसे आप और कांग्रेस का समर्थन मिला।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राजधानी में प्रदूषण के खिलाफ अब लोग भी सड़क पर उतरने लगे हैं। रविवार को इंडिया गेट पर एकजुट होकर लोगों ने शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन को देखते हुए पुलिस ने इंडिया गेट की सुरक्षा बढ़ा दी थी।

कर्तव्य पथ पर्यटकों के लिए पूरी तरह से बंद करने के साथ पुलिस बल के साथ अर्ध सैनिक



बल के जवानों को भी तैनात कर दिया गया था। मान सिंह रोड जैसे ही प्रदर्शनकारियों ने पहुंचकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन शुरू किया तो पुलिस ने अनुमति न होने की बात कहते हुए प्रदर्शनकारियों को हिरासत में ले लिया। थाने में ले जाने के बाद उन्हें छोड़ दिया गया।

प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जो आंकड़े दिखाए जा रहे हैं, प्रदूषण उससे ज्यादा है। ऐसे में दिल्ली सरकार और अधिकारी कोई ठोस

कार्रवाई करने के बजाय शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन को बंद कराने में लगे हैं। दिल्ली वासी केवल अपना सांस लेने का अधिकार मांग रहे हैं। दीपावली के बाद से दिल्ली की हवा जहरीली बनी हुई है।

ऐसे में दिल्लीवासियों का सांस लेना दुःख हो गया है, बावजूद इसके सरकार न तो लाकडाउन, न शटडाउन और न ही वर्क फ्राम होम जैसा कोई आदेश लागू नहीं कर रही है।

केवल क्लाउड सीडिंग और ध्यान भटकाने वाली बातें सुनने को मिल रही हैं। यह स्थिति दुर्भाग्यपूर्ण है।

'बेशक सांस नहीं मगर लड़ने का साहस सही', 'प्रदूषण से मचा है हाहाकार- निदान करो सरकार', 'बच्चे, बूढ़े और जवां सबको चाहिए साफ हवा...' इन नारों की तखियां लिए प्रदर्शनकारियों का कहना है कि दिल्ली सरकार ने लोगों को जहरीली हवा में रहने के लिए छोड़ दिया है।

सरकार की जिम्मेदारी है कि वह लोगों को स्वच्छ हवा और पानी दे। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, रविवार सुबह शहर में वायु गुणवत्ता 'बेहद खराब' श्रेणी में रही। मुहिम से जुड़े सौरव ने बताया कि हैशटैग 'हेल्पअसब्रीद' के साथ ये विरोध आगे बढ़ा रहे हैं। यह विरोध प्रदर्शन 'वारियर मॉस्ट' और 'माइ राइट टू ब्रीद' जैसे नागरिक समूहों के बैनर तले प्रदूषित हवा के खिलाफ किया जा रहा है। इस विरोध प्रदर्शन और मुहिम का उद्देश्य साफ हवा की मांग है। इस प्रदर्शन का आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने भी समर्थन दिया है।

## 5 किलोमीटर लंबी कतार का 3 लाख से अधिक लोगों ने किया जगह जगह भरपूर स्वागत : पूज्य बागेश्वर धाम सरकार की सनातन हिंदू एकता पदयात्रा



परिवहन विशेष न्यूज

150 किलोमीटर की दूरी इस पदयात्रा को तय करनी है। पहले दिवस की पदयात्रा 11 किलोमीटर की है। 11 किलोमीटर में से 5 किलोमीटर तक तो सिर्फ जन सैलाब दिखाई दे रहा था। 12 साल के बच्चे से लेकर 65 साल तक के वृद्ध, माताएं बहने महाराज श्री के साथ

पदयात्रा में चल रही है। शायद उन्हें भरोसा है कि महाराज श्री ही भारत में लोगों के मानस में सोया हुआ सनातन जगा सकते हैं इसी आशा के साथ वे सड़क पर निकल पड़े हैं। 200 से अधिक स्थानों में हुई पुष्प वर्षा, जगह-जगह जलपान की व्यवस्था पदयात्रा का 200 से अधिक

स्थानों में पुष्प वर्षा के साथ स्वागत हुआ। जिस क्षेत्र से पदयात्रा निकल रही थी उस क्षेत्र के लोग घरों से बाहर निकल आए। दरवाजे, छतों एवम ऊंचे स्थानों में खड़े होकर लोग पदयात्रा का अभिवादन कर रहे थे। लोगों ने जगह जगह पुष्प वर्षा कर सनातनियों का उत्साह बढ़ाया।

## क्या दिल्ली में लागू होंगे GRAP-3 के नियम? प्रदूषण को लेकर CAQM ने दिया अपडेट; AQI 370 के पार

दिल्ली में प्रदूषण का स्तर बढ़ने के कारण वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी में पहुंच गई है। CAQM ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) लागू करने पर विचार कर रहा है। CAQM का कहना है कि फिलहाल दिल्ली में हवा की गुणवत्ता सुधर रही है, ऐसे में GRAP के नियम लागू नहीं किए जा रहे हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में रविवार को वायु गुणवत्ता में मामूली सुधार हुआ। इसके बाद वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने फिलहाल ग्रेप तीन के तहत कड़े प्रतिबंध लगाने से इनकार कर दिया। दिल्ली का दैनिक औसत एक्यूआइ रविवार सुबह 'बहुत खराब' श्रेणी के उच्च स्तर पर रहने के बाद, सीएक्यूएम की ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रेप) उप-समिति ने वायु गुणवत्ता की स्थिति की समीक्षा के लिए शाम को बैठक की। समिति के अनुसार सुबह 10 बजे दिल्ली का प्रति घंटा औसत एक्यूआइ



391 था, लेकिन शाम चार बजे तक सुधर कर 370 और शाम पांच बजे 365 हो गया।

मौसम विभाग और आइआइटीएम पुणे के पूर्वानुमानों से भी संकेत मिलता है कि आने वाले दिनों में समग्र वायु गुणवत्ता 'बहुत खराब' श्रेणी

में ही रहने की संभावना है। सुधार के रुझान और पूर्वानुमानों को ध्यान में रखते हुए, उप-समिति ने निर्णय लिया कि वर्तमान में ग्रेप के चरण तीन के प्रतिबंधों को लागू करने की कोई आवश्यकता नहीं है। चरण एक

और दो के तहत चल रहे उपाय ही राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में जारी रहेंगे। समिति ने यह भी कहा कि वह स्थिति पर बारीकी से नजर रख रही है और आवश्यकतानुसार वायु गुणवत्ता परिदृश्य की समीक्षा करेगी।

मालूम हो कि ग्रेप तीन में गैर-जरूरी निर्माण कार्यों पर प्रतिबंध लग जाएगा। पांचवीं तक की कक्षाओं को हाइब्रिड मोड में स्थानांतरित करना आवश्यक है। अभिभावकों एवं छात्रों के पास जहां भी उपलब्ध हो, ऑनलाइन शिक्षा चुनने का विकल्प है। इसके अलावा दिल्ली और आसपास के एनसीआर जिलों में बीएस तीन पेट्रोल और ओएस चार डीजल कारों (चार पहिया वाहनों) का उपयोग प्रतिबंधित है। विकलांग व्यक्तियों को इससे छूट दी गई है।

प्रतिकूल मौसमी परिस्थितियों, वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन, धान की पराली जलाने, पटाखों और अन्य स्थानीय प्रदूषण स्रोतों के कारण सर्दियों के दौरान दिल्ली-एनसीआर में वायु गुणवत्ता का स्तर खतरनाक हो जाता है।

## राजस्थान के पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र बने विश्व ब्राह्मण कल्याण परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष



समाज में समरसता, ज्ञान और सद्भाव का वातावरण बने : पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र

परिवहन विशेष न्यूज

राजधानी दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में विश्व ब्राह्मण कल्याण परिषद् द्वारा एक विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें समाज सुधार, आध्यात्मिक जागरण और राष्ट्रीय एकता के उद्देश्य से कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। इस मौके पर परिषद् के संरक्षक कैलाशाशंकर गिरी जी महाराज की अध्यक्षता में प्रमुख पदों पर नई

नियुक्तियों की घोषणा की गई। उन्होंने कलराज मिश्रा को परिषद् का अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, सतीश शर्मा को कार्यकारी अध्यक्ष, और राज्यसभा सांसद दिनेश शर्मा को सलाहकार के रूप में नियुक्त किया। इसके अलावा विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पदों के लिए भी घोषणा की गई, ताकि परिषद् के मिशन को जमीनी स्तर पर मजबूत किया जा सके। इस अवसर पर परिषद् के संस्थापक अध्यक्ष और पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र ने अपने संदेश में कहा कि

परिषद् केवल संगठन नहीं, एक यज्ञ है। विश्व ब्राह्मण कल्याण परिषद् केवल एक पारंपरिक संगठन नहीं, बल्कि यह सेवा, समर्पण और सद्भाव का पवित्र यज्ञ है। उन्होंने कहा कि इसका उद्देश्य ब्राह्मण समाज के माध्यम से भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और राष्ट्रहित के उत्थान की दिशा में कार्य करना है। मिश्र ने कहा कि परिषद् का संकल्प है कि समाज में समरसता, ज्ञान और सद्भाव का वातावरण बने, जिससे भारत अपने प्राचीन गौरव के अनुरूप विश्व-आदर्श राष्ट्र के रूप में पुनः स्थापित हो सके।

## पर्यावरण पाठशाला : "प्रकृति का साथ – स्वास्थ्य का आधार"



- डॉ. अंकुर शरण

आज जब जीवन की गति अत्यधिक तेज हो चुकी है, हम अपने स्वास्थ्य और मानसिक शांति की तलाश में भटक रहे हैं, जबकि उसका सबसे सरल उपाय हमारे आसपास ही मौजूद है — प्रकृति। पेड़, नदी, पर्वत, हवा, पक्षी — ये सब न केवल हमारी साँसों का सहारा हैं, बल्कि जीवन के वास्तविक शिक्षक भी हैं। लेकिन दुर्भाग्य से, हमने आधुनिकता के नाम पर इन्हें को सबसे अधिक क्षति पहुँचाई है। अब समय आ गया है कि हम उठें, सोचें और

अपने जीवन में प्रकृति को फिर से शामिल करें।

प्रकृति का संरक्षण ही एकमात्र उपाय है स्वयं को स्वस्थ रखने का। आज हम जो प्रदूषण, बीमारियाँ और मानसिक तनाव झेल रहे हैं, उसका मूल कारण हमारा प्रकृति से दूरी बना लेना है। यदि हम अपने स्वास्थ्य, परिवार और समाज के लिए वास्तव में चिंतित हैं, तो हमें सबसे पहले पर्यावरण संरक्षण को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा। यह केवल सरकारों या संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि हर नागरिक का नैतिक कर्तव्य है।

पर्यावरण पाठशाला का यही संदेश है — "सोचिए प्रकृति से, जीना सादगी से।"

हम सबको यह समझना होगा कि परिवर्तन की शुरुआत हमसे ही होती है। अपने आस-पास स्वच्छता रखना, जल का विवेकपूर्ण उपयोग करना, सिंगल यूज प्लास्टिक से दूरी बनाना, और अपने घर की छत पर पौधे लगाना — ये सब छोटे कदम ही सही, लेकिन बड़े परिवर्तन की नींव रखते हैं। हमें गलत को गलत कहने की हिम्मत रखनी चाहिए। जब कोई सड़क पर कचरा फेंके या पेड़ काटे, तो चुप रहना भी उतना ही

अपराध है जितना यह कृत्य। समाज में सकारात्मक परिवर्तन के लिए हमें साहस के साथ प्रकृति के पक्ष में खड़ा होना होगा। प्रकृति हमें हर पल कुछ न कुछ देती है — शुद्ध हवा, स्वच्छ जल और जीवन का आनंद। अब हमारी बारी है उसे लौटाने की। आइए, एक संकल्प लें — हर दिन एक ग्रीन एक्शन अवश्य करेंगे, चाहे वह पौधा लगाना हो, पक्षियों के लिए पानी रखना हो या बच्चों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाना।

indiangreenbuddy@gmail.com



**अगर आपकी सड़क पर गड्डे या गंदगी हो तो आप मेरा इस्तेमाल करेंगे।**

शिकायत दर्ज करने और तुरंत हल पाने के लिए।

Hint में एक टैप हैं

mcDonline.nic.in @MCD\_Delhi off.MCD @mcd\_delhi

## हम चलें हैं सफर में तन्हा



डॉ. क्षमा पाटले "अनंत" (अंतर्राष्ट्रीय साहित्यकार एवं समाजसेवी) जांजगीर-वांपा, छत्तीसगढ़

कवयित्री की कलम से...

डॉ. क्षमा पाटले "अनंत" की यह भावपूर्ण रचना "हम चलें हैं सफर में तन्हा" आत्मसंघर्ष, प्रेम और आत्मविश्वास की अनूठी अभिव्यक्ति है। कविता में विरह की वेदना के साथ जीवन की दुड़ता झलकती है। हर पंक्ति में संवेदना और आत्मचिंतन का गहरा स्पर्श है, जहाँ अकेलेपन के बीच भी आत्मबल और प्रेम का उजाला दिखाई देता है। यह रचना पाठक को अपने भीतर झाँकने और रिश्तों की गहराई को महसूस करने के लिए प्रेरित करती है — एक ऐसी कविता जो तन्हाई को भी ताकत बना देती है।

हम चलें हैं सफर में दूर तक तन्हा, तेरे आने से वो कमी पूरी हुई,

मुकम्मल मेरी कहानी हुई...

साँस आती थी, साँस जाती थी, नम आँखों में रात बीत जाती थी। तूने छुआ जो, तुझको ऐसे, मैं जिंदा हूँ — ये एहसास हुआ। हर तरफ था अंधेरा साया घना, हम चलें हैं सफर में दूर तक तन्हा।

दिल के अरमान घुट-घुट कर मर गये, गम के कौंटे भी सीने में चुभ गये। मुझको आदत है टूटकर खुद संभलने की, घंटों आसमाँ में चाँद तकने की। अब तो जमाने से भी कोई शिकवा न रहा, हम चलें हैं सफर में दूर तक तन्हा।

ख्याब नये बुन रही हूँ अब तो, साथ तू है, तो है क्या गम मुझको। मेरी हस्ती तेरी दहलीज पर हो, वादा-ए-मोहब्बत का रूह-ए-सुकून तक हो। कशिश इश्क की क्या समझाँगा जहाँ, हम चलें हैं सफर में दूर तक तन्हा।



## मां सीता रसोई के द्वारा सनातन एकता पदयात्रा की सफलता हेतु किया गया सामूहिक सुन्दर काण्ड पाठ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मोतीझील क्षेत्र स्थित देवराज बाबा आश्रम में मां सीता रसोई के तत्वावधान में बागेश्वर धाम सरकार के द्वारा निकाली जा रही सनातन एकता पदयात्रा की सफलता के लिए सुंदर काण्ड का संगीतमय सामूहिक पाठ किया गया जिसमें कई प्रख्यात सन्तो, विद्वानों, धर्माचार्यों एवं तमाम भक्तों-श्रद्धालुओं ने भी बद्ध-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमज्जदरु श्रीनाभापीठाधीश्वर स्वामी सुतीक्ष्णदास देवाचार्य महाराज, श्रीसुग्रीव किला पीठाधीश्वर जगदुरु स्वामी विश्वेशप्रपन्नाचार्य महाराज, वृन्दावन बालाजी देवस्थान के संस्थापक पण्डित अनुराग वादक एवं श्रीउमाशक्ति पीठाधीश्वर स्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज ने वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य दीप प्रज्वलित करके किया।

इस अवसर पर शरणागत आश्रम के महंत बिहारी दास भक्तमाली महाराज, रघूपी रत्नर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, पण्डित बिहारीलाल



वशिष्ठ, रघूपी रत्नर चित्रकार द्वारिका आनन्द, बलदेव स्थित दाऊजी मन्दिर के पूर्व रिसोवर डॉ. आर.के. पाण्डेय, पण्डित रामनिवास शर्मा (गुरुजी), प्रमुख समाजसेवी प्रदीप वनर्जी, आचार्य अखिलेश शास्त्री, सन्त रामदास महाराज (अयोध्या), युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, पण्डित राजू

शै्या, पण्डित जयगोपाल शास्त्री, पण्डित वेदबिहारी महाराज, बाल व्यास ध्रुवजी महाराज आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन आचार्य ब्रदीश महाराज ने किया। धन्यवाद ज्ञापन व आभार व्यक्त आचार्य अंशुल पाराशर ने किया।

मां सीता रसोई की संचालिका व प्रमुख

समाजसेविका श्रीमती मनप्रीत कौर (लुधियाना) ने कार्यक्रम में पधारे सभी आंगतुक अतिथियों का पटुका ओढ़ाकर व माल्यार्पण कर स्वागत किया। कार्यक्रम का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

## वात्सल्य ग्राम में आयोजित हुआ द्वि-दिवसीय निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर



(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड स्थित वात्सल्य ग्राम के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में गंधार फाउण्डेशन एवं कलावेन बाबू लाल चैरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई के संस्थापक रमेश भाई पारिक के द्वारा द्वि-दिवसीय निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया जिसके अंतर्गत सैकड़ों नेत्र रोगियों को निःशुल्क औषधि एवं चर्मा वितरण किया गया।

शिविर का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि आचार्य मुदुल कान्त शास्त्री ने यजुर्वेद का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि सौ वर्ष का जीवन भी बिना नेत्र ज्योति बेकार है। बिना नेत्र ज्योति के बलिष्ठ व्यक्ति भी दूसरों पर आश्रित हो जाता है। हम जितना भी जीवन जिए संसार की शुभता का दर्शन करते हुए जिए, तभी हमारा जीवन जीना सार्थक है। नेत्र दान से बड़ा कोई दान नहीं होता।

मुख्य अतिथि भुवन भूषण कमल ने कहा कि ईश्वर ने केवल दो लोगों को अपनी विशेष कृपा प्रदान डाक्टर एवं न्यायाधीश दो को ही ईश्वर का दर्जा दिया गया है। वात्सल्य ग्राम खड़े करने में दीदी माँ जी का त्याग, तपस्या, तपस्या - समर्पण का ही प्रतिफल है। डॉ. श्याम अग्रवाल ने फरवरी 2026 तक प्रत्येक माह लगने वाले शिविर की जानकारी देते हुए कहा कि श्रद्धेय दीदी माँ की कृपा एवं आशीर्वाद के बिना कैम्प कराना सम्भव ही नहीं है।

डॉ. आरती अग्रवाल ने रोगियों को आँख के साथ सावधानियां बताते हुए कहा कि ऑपरेशन वालों को अपनी आँख की देखभाल हाल के पैदा हुए बच्चे के समान करना चाहिए आँख जीवन का अमूल्य रत्न है इसे संभाल कर रखना आपकी जिम्मेदारी है। शिविर में आगरा, इटावा, फररुवावाद, मैनपुरी, पीलीभीत,

बदायूं, भरतपुर, दिल्ली, कासगंज, अलीगढ़, हाथरस, मथुरा-वृन्दावन आदि स्थानों से 308 रोगियों के मोतियाबिन्द का निःशुल्क ऑपरेशन मुम्बई के नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम अग्रवाल एवं डॉ. विशाल राठौर, डॉ. राहुल जैन, डॉ. मयूर अग्रवाल, डॉ. आरती अग्रवाल, डॉ. अनुज वाहुआ, डॉ. जुगल शाह, डॉ. श्वेता डॉ. आदि ने सफल ऑपरेशन किये।

इस अवसर पर साध्वी साक्षी चेतना, संजय भैया, साध्वी शिरोमणि, साध्वी सत्य श्रद्धा, साध्वी सत्यव्रता, साध्वी सत्य श्रुति, स्वामी आलोकानन्द, श्रीमती ब्रज लता गोयल, शिविर की संयोजिका मीनाक्षी अग्रवाल, रमाकान्त शर्मा, महेन्द्र सिंह आदि की उपस्थिति विशेष रही। साध्वी शिरोमणि ने आभार व्यक्त किया तथा संचालन डॉ. उमाशंकर राही ने किया।

## नदियाँ हमारी सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग : निशा शर्मा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। केशीघाट-यमुना तट पर इनर क्लब ऑफ वृन्दावन, दिव्य शक्ति के तत्वावधान में राष्ट्रीय नदी संरक्षण परियोजना व यमुना संरक्षण परियोजना के अंतर्गत नौका विहार यात्रा निकाली गई। साथ ही जन समुदाय को मां यमुना को गंदा न करने और हर तरह से शुद्ध, स्वच्छ और पवित्र बनाने के लिए लोगों से अपील की गई।

इस अवसर पर क्लब की अध्यक्ष निशा शर्मा ने कहा कि नदियाँ हमारे सभ्यता और संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। यह जीवन दायनी नदियाँ हमारी धरोहर हैं। जिनका संरक्षण करना प्रत्येक प्राणी का प्रमुख कर्तव्य है।

पूर्व अध्यक्ष संस्था शर्मा एवं एडिटर नवीन थोकदार ने कहा कि भारत के अनेक शहरों की पहचान नदियों के कारण है। कार्तिक मास में आए हुए समस्त श्रद्धालु एवं पर्यटकों से मां यमुना को आचमन योग बनाने के लिए श्रम दान करने का आग्रह किया गया।

इस अवसर पर निर्मल शर्मा, निर्जला शर्मा, अनुराधा शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।



## युवा वर्ग ही बचाएं धरती को

हरिहर सिंह चौहान इन्टैर

प्यार की धरा जहां लगातार प्रभावित होती रहती है, सत्य, अहिंसा, त्याग व दया की नींव पर मानव अपने सिर को ऊँचा करके चलता है। जहां पशु-पक्षियों तथा अन्य प्राणियों की रक्षा व उनकी सुरक्षा करना हम सभी के धर्म में लिखा है, वहीं भारतीय संस्कृति व सभ्यता की अनमोल धरोहर पशु-पक्षियों में भी है। इसके कई उदाहरण हमारे धर्म ग्रंथों व धर्मशास्त्रों में मिलते हैं। आज हम लोग विज्ञान के आधुनिक दौर में जकड़े हुए हैं। देखना होगा कि यह नादानो हमें कहां ले जाती है। कल जो भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाता था, वह दूसरे देशों से कर्ज ले रहा है। जहां सदा प्रेम की मुरलियाँ बजती थीं, जहां दूध की गंगा बहती थी, वहीं आज पूरी धरती में जहाँ देखो, वहाँ खून की नदियाँ बह रही हैं। हमारी मातृभूमि खून से लथपथ हो गई है। हिंसा मार-काट के कारण आज मनुष्य भटक रहा है। इसलिए, सामाजिक धार्मिक व मानव सेवा की प्रवृत्ति खत्म-सी होती जा रही है।

भारत जैसा देश जो कल तक कृषि प्रधान देश कहलाता था, जहां दूध की धारा बहती थी, उसी देश में आज पशु मांस से धन कमाया जा रहा है। दूध की जगह खून की नदियाँ बह रही हैं। आज भोगवादी संस्कृति में आदमी, आदमी का दुश्मन बना हुआ है। हिंसा का बोलबाला है, यह कैसा अनादर है? देश के लोगों की यह कैसी मनोदशा हो गई है। लोगों के अन्दर देश-प्रेम व मानव सेवा के साथ पशु-पक्षियों के लिए प्रेम व स्नेह का भाव धूमिल हो रहा है। जिस देश में गाय, बैल, मुर्गा, बकरी, मछली आदि मूक प्राणियों का मांस खुलेआम बिक रहा है, फिर भी आज का युवा वगैरह चुपचाप बैठे हुए यह सब देख रहा है। धिक्कार है आजकल की युवा पीढ़ी पर, जो युवा होते हुए भी सब देख रही है। ऐसी युवा पीढ़ी को अब जगाना ही होगा, क्योंकि युवा भारत में युवा पीढ़ी सोई हुई हो तो वह देश कैसे आगे बढ़ सकता



है!

आज जारी हिंसा में सबसे ज्यादा पशु-पक्षी प्रभावित हो रहे हैं। जो मानव कल तक पशु-पक्षियों को अपना शुभचिंतक व हितैषी मानता था, वहीं मानव आज उनका मांस खा रहा है। इस तरह के हत्याचारी, कत्लखानों व मांस विक्रय केन्द्रों से धरती माँ खून से लथपथ हो गई है। खून से लथपथ इस धरती को अब युवा तर्पणाई ही बचा सकती है। अगर वह खुद सदाचारी व शाकाहारी हो तो बात बनेगी। आज की युवा पीढ़ी का शाकाहारी होना समय की आवश्यकता है। इन युवा तर्पणाई में सभी धर्म के युवा साधियों को मांसाहारी चीजों का त्याग करना होगा और मांस विक्रय केन्द्रों व बूटडखानों के प्रति अपनी अभिव्यक्ति बलुंद करनी ही होगी। तभी मांसाहार की खरीद-फरोख्त का धंधा बंद होगा। संगठित होकर अपनी चेतना को जागृत करना होगा। इस विषय पर युवा पीढ़ी को अपनी आवाज उठानी

पड़ेगी।

अगर हम अपने यहाँ ही मातृभूमि पर पशु-पक्षियों का कल्लेआम होते हुए देखेंगे, तो यह शर्म की बात होगी। यह पूरे समाज व राष्ट्र के लिए कलंक का विषय है। जिस गाय माता का दूध पीकर हम अपने शरीर को स्वस्थ बनाते हैं, उसी गाय को कसाई के यहाँ हत्या करने हेतु दे देते हैं, यह तो महापाप है। जिस गाय माता का दूध पीते हुए हम बड़े हुए, उसके बेटे ही उसकी हत्या कर मांस बेच रहे और खा भी रहे हैं? आज मांसाहारी खाता खाने वाले व्यक्तियों में बीमारी काफ़ी ज्यादा पाई जाती है। जैसे-कैंसर, ब्लडप्रेसर, मोटापा, गुर्दे के रोग, कब्ज और अन्य संक्रामक रोग सहित पथरी व जिगर की बीमारियाँ इसमें हैं। हमारे देश में पश्चिमी देशों से ज्यादा बीमारी पायी जाने लगी है। इस परम सत्य को कई प्रसिद्ध शोधकर्ताओं व चिकित्सकों ने कहा है, कि जो व्यक्ति शाकाहारी होता है, उसका मन शांत व

खुशीमजाज होता है। अतः, सभी युवा पीढ़ी को शाकाहारी भोजन ही करना चाहिए तथा मांस, शराब, चरस, तम्बाकू, बीड़ी सिगरेट आदि अन्य नशीली चीजों व मांस का सेवन नहीं करना चाहिए। मूक पशु-पक्षियों को मारकर उनका मांस खाना कहीं की मानवीय संवेदना है? खरोध तो होना चाहिए कि मांसाहारी चीजों को खाना बंद करें। यह एक तरह की बुराई है। इसके प्रति युवा पीढ़ी को सजगता के साथ शाकाहारी भोजन की तरफ बढना चाहिए। तभी राम, कृष्ण, प्रभु महावीर, गांधी व विवेकानंद जैसे महापुरुषों के इस भारत में अहिंसा व शान्ति बनी रहेगी। इससे भारत का स्वाभिमान भी जागृत होगा। तभी भारत प्रति पथ पर आगे बढता रहेगा। आज समय है कि सभी अहिंसा प्रेमी बंधुओं की पुकार शाकाहारी होना चाहिए। शाकाहारी आहार के प्रति ज्यदा से ज्यादा ध्यान देना होगा और अपनी धरती को बचाना होगा।

## क्या वास्तव में बैंक निजीकरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है? - वित्त मंत्री के बयानों से उत्पन्न हलचल, संकेत और सच्चाई - बैंक राष्ट्रीयकरण से निजीकरण की बहस तक का सटीक विश्लेषण

भारतीय बैंकिंग प्रणाली को सुधार की आवश्यकता है, इसका मतलब निजीकरण नहीं-दुनियाँ के कई देशों ने "साझा मॉडल" अपनाया है, जहाँ सरकार और निजी क्षेत्र दोनों की भागीदारी होती है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गौदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर भारत में बैंकिंग क्षेत्र हमेशा से आर्थिक नीति और सामाजिक न्याय का केंद्र रहा है। 1969 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा 14 प्रमुख बैंकों के राष्ट्रीयकरण के साथ जिस नए युग की शुरुआत हुई, उसका उद्देश्य केवल पूंजी का पुनर्वितरण नहीं था बल्कि समाज के हाशिए पर खड़े लोगों को वित्तीय समावेशन में लाना था। बैंक शाखाओं का ग्रामीण विस्तार, प्राथमिक क्षेत्र को ऋण प्रवाह, और आम नागरिक की आर्थिक पहुँच को सुनिश्चित करना, ये सब उस नीति का सार था। परंतु अब, जब भारत की अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण, डिजिटलकरण और प्रतिस्पर्धा की नई लहर में प्रवेश कर चुकी है, तो सवाल उठता है, क्या राष्ट्रीयकृत बैंक अपनी सामाजिक भूमिका के साथ-साथ आर्थिक दक्षता भी निभा पा रहे हैं? इसी संदर्भ में हाल ही में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के बयान ने न केवल नीति निर्माताओं, बल्कि बैंक यूनियनों, उद्योग जगत और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय विश्लेषकों में भी हलचल पैदा कर दी है। केंद्रीय वित्त मंत्री ने हाल ही में कहा कि "जिस उद्देश्य से बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया था, वह अभी पूरी तरह पूरा नहीं हुआ है।" यह कथन अपने आप में दोहरे अर्थों से भरा है। एमिडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गौदिया महाराष्ट्र यह मानता है कि एक तरफ यह स्वीकारोक्ति है कि राष्ट्रीयकरण की मूल भावना, ग्रामीण ऋण, सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता, अब भी अधूरी है। वहीं दूसरी ओर, यह भी संकेत देता है कि सरकार इस "अधूरेपन" को पूरा करने के लिए नई नीतिगत दिशा में सौच रही है। बयान के तुरंत बाद मीडिया और बैंकिंग हलकों में सवाल उठा, क्या इसका अर्थ यह है कि सरकार

अब निजीकरण की प्रक्रिया को धोमा कर रही है? या यह केवल रणनीतिक 'रीपोजिशनिंग' है, जिसमें सरकार अपने कदमों को अधिक राजनीतिक और सामाजिक स्वीकार्यता दिलाने का प्रयास कर रही है?

साथियों बात अगर हम 4 नवंबर 2025, को दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स हीरक जयंती व्याख्यान में वित्तमंत्री का आर्थिक दृष्टिकोण को समझने की करें तो, दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में आयोजित हीरक जयंती समापन व्याख्यान (4 नवंबर 2025) में वित्तमंत्री ने जिस स्पष्टता से निजी बैंकों के प्रदर्शन की सराहना की, वह संदेश सीधा था, सरकार निजी क्षेत्र की कार्यक्षमता को स्वीकार कर रही है। उन्होंने कहा कि निजी बैंक "बेहतर ढंग से कार्य कर रहे हैं" और उनकी गवर्नेंस, कर्ज प्रबंधन और टेक्नोलॉजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर सरकारी बैंकों की तुलना में कहीं अधिक प्रभावी है। इस वक्तव्य को विशेषज्ञों ने एक "साफ्ट आइड" के रूप में देखा है, यह संकेत कि सरकार सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को भी उसी दक्षता और प्रतिस्पर्धात्मक भावना में लाना चाहती है, जो निजी क्षेत्र में दिखाई देती है। हालांकि वित्त मंत्री ने यह भी जोड़ा कि "राष्ट्रीयकरण का मकसद अभी पूरा नहीं हुआ", जो यह बताता है कि सरकार सामाजिक दायित्वों को नकार अंदाज नहीं कर रही। फिर भी, यह स्पष्ट था कि सरकार अब बैंकिंग क्षेत्र में संरचनात्मक सुधारों के अंतिम चरण में प्रवेश करने जा रही है और इनमें निजीकरण एक महत्वपूर्ण घटक हो सकता है।

साथियों बात अगर हम एएसबीआई बैंकिंग एंड इकोनॉमिक्स सम्मेलन में वित्त मंत्री के दूसरे संकेत को समझने की करें तो, 12 वें 'एसबीआई बैंकिंग एंड इकोनॉमिक्स सम्मेलन 2025' में वित्त मंत्री ने वित्तीय संस्थानों से उद्योग जगत के लिए कर्ज प्रवाह को बढ़ाने और व्यापक बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि "विकास के अगले दशक में बैंकों को उद्योगों, स्टार्टअप और इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को अधिक ऋण देना होगा, ताकि भारत वैश्विक निवेश केंद्र बन सके।" यह बयान सिर्फ आर्थिक

प्रोत्साहन का आग्रह नहीं था, बल्कि यह एक नीतिगत संकेत भी था, सरकार बैंकिंग प्रणाली को प्रतिस्पर्धी और नवाचार आधारित बनाना चाहती है। निजी क्षेत्र की बैंकिंग प्रणाली पहले से ही इस दिशा में अग्रणी मानी जाती है, फिनटेक, डिजिटल पेमेंट्स, माइक्रो-लेंडिंग और ग्राहक अनुभव के क्षेत्र में। ऐसे में वित्तमंत्री के शब्दों में "निजीकरण का समर्थन झलकना" स्वाभाविक था। विश्लेषकों का मानना है कि यह भारत सरकार का "मिश्रित मॉडल" की ओर झुकाव दर्शाता है—जहाँ सरकारी क्षेत्र के बैंक सामाजिक निष्ठा रहे, और निजी बैंक आर्थिक गतिशीलता को आगे बढ़ाएँ।

साथियों बात अगर हम इस बात को समझने की करें कि क्या वास्तव में निजीकरण प्रक्रिया शुरू हो गई है? यहाँ सवाल का मूल यही है। क्या सरकार ने बैंक निजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी है या यह केवल संकेतों की राजनीति है? वास्तविक स्थिति यह है कि 2021 में वित्त मंत्री ने वित्त मंत्री के निजीकरण की प्रक्रिया शुरू कर दी है। नीति आयोग ने बिना दौड़ के चयन किया था उनके नाम सार्वजनिक नहीं किए गए, पर चर्चा में बैंक ऑफ महाराष्ट्र, इंडियन ओवरसीज बैंक और सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के नाम रहे। 2023-24 में सरकार ने इन बैंकों के प्रदर्शन को सुधार पर अधिक ध्यान दिया, नॉन परफॉर्मिंग एसेट्स कम करने और पूंजी निवेश बढ़ाने की कोशिश की। विशेषज्ञों का कहना है कि सरकार पहले बैंकों की बेलेस शीट मजबूत करना चाहती है ताकि निजीकरण से पहले उन्हें बाजार में बेहतर मूल्यांकन मिल सके। वित्त मंत्री के हालिया बयान कि "राष्ट्रीयकरण का उद्देश्य अभी अधूरा है" को इसी संदर्भ में देखा जा सकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि सरकार पीछे हटी है, बल्कि यह कि सरकार निजीकरण को धीरे और रणनीतिक तरीके से लागू करना चाहती है, ताकि न तो राजनीतिक विरोध बढ़े



और न ही वित्तीय अस्थिरता उत्पन्न हो। अर्थात्, निजीकरण की प्रक्रिया औपचारिक रूप से शुरू नहीं हुई है, पर उसकी तैयारी और माहौल निर्माण स्पष्ट रूप से जारी है।

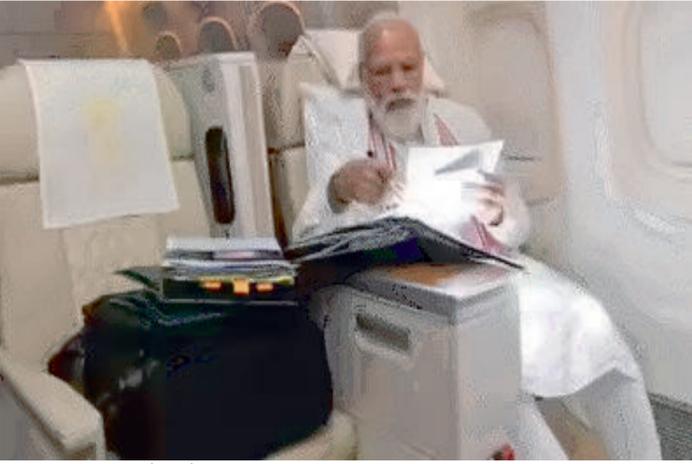
साथियों बात अगर हम बैंक यूनियनों की प्रतिक्रिया:तरफदारी वाले बयान से असहजता को समझने की करें तो वित्तमंत्री के इन बयानों ने जहाँ उद्योग जगत और निजी क्षेत्र में उत्साह बढ़ाया, वहीं बैंक कर्मचारियों और यूनियनों में चिंता की लहर दौड़ गई। ऑल इंडिया बैंक इम्प्लॉइज एसोसिएशन, यूनाइटेड फोरम ऑफ बैंक यूनियंस जैसी संस्थाओं ने बयान को निजीकरण समर्थक झुकाव बताया। उनका तर्क है कि निजी बैंकों में लाभ प्राथमिक उद्देश्य होता है, जबकि सरकारी बैंकों की भूमिका समाजिक जिम्मेदारी निभाना है, गांवों में शाखाएँ खोलना, गरीबों को सस्ती दर पर ऋण देना, और सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करना। यूनियनों का कहना है कि अगर सरकार निजीकरण की ओर बढ़ती है तो ये सामाजिक लक्ष्य पीछे छूट सकते हैं। इसके अलावा कर्मचारी वर्ग को नौकरी की सुरक्षा, पेंशन, और

द्विसंस्पर्धी नीतियों को लेकर भी आशंकाएँ हैं। यूनियनों ने 2024 में इस विषय पर देशव्यापी हड़ताल की चेतावनी दी थी, जिसके बाद सरकार ने निजीकरण पर बयानबाजी को सीमित रखा था। साथियों बात अगर हम बैंक यूनियनों की दृष्टिकोण: क्या निजीकरण हमेशा लाभदायक रहा है? को समझने की करें तो, वित्तीय सुधारों का वैश्विक अनुभव बताता है कि बैंकिंग क्षेत्र में निजीकरण का प्रभाव मिश्रित रहा है। ब्रिटेन ने 1980 के दशक में बैंकिंग निजीकरण से कार्यकुशलता तो बढ़ी, परंतु ग्रामीण और निम्न-आय वर्ग तक बैंकिंग सेवाओं की पहुँच सीमित हो गई। रूस और लैटिन अमेरिकी देशों में निजीकरण के बाद वित्तीय संकट और सामाजिक असमानता बढ़ी। वहीं सिंगापुर और दक्षिण कोरिया ने "हाइब्रिड मॉडल" अपनाया, जिसमें सार्वजनिक और निजी बैंक दोनों को समान नीति-आधारित स्वायत्तता दी गई और ये देश वित्तीय स्थिरता के उदाहरण बने। भारत इस समय इन अनुभवों के बीच संतुलन खोज रहा है। पूरी तरह निजीकरण करने से पहले उसे यह

सुनिश्चित करना होगा कि वित्तीय समावेशन, रोजगार सुरक्षा और सामाजिक न्याय पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि वित्त मंत्री के हालिया बयानों को अगर शब्दशः देखा जाए तो यह कहना गलत नहीं होगा कि सरकार ने निजीकरण से पीछे हटने की घोषणा नहीं की, बल्कि नीति को अंगूठ से प्रस्तुत करने की रणनीति अपनाई है। बैंकिंग क्षेत्र में सुधार अब केवल स्वामित्व परिवर्तन का विषय नहीं रहा, बल्कि यह प्रदर्शन, पारदर्शिता प्रौद्योगिकी और उत्तरदायित्व का समग्र कार्यक्रम बन चुका है। सरकार चाहती है कि जब निजीकरण की औपचारिक घोषणा हो, तब तक बैंकों की वित्तीय स्थिति इतनी मजबूत हो कि कोई भी बिक्री "बचाव का उपाय" नहीं बल्कि "नीतिगत सुधार" प्रतीत हो। इसलिए अपनाई यह कहना उचित होगा कि "बैंक निजीकरण की प्रक्रिया अभी औपचारिक रूप से शुरू नहीं हुई है, लेकिन उसके संकेत, दिशा और नीतिगत तैयारी स्पष्ट रूप से प्रगति पर है।"

# भागलपुर में पीएम मोदी की शौडो वार रणनीति से लुढ़केगा विपक्ष का ग्राफ

# भागलपुर में पीएम मोदी की शौडो वार रणनीति से लुढ़केगा विपक्ष का ग्राफ



कमलेश पांडेय

**कमलेश पांडेय**

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गत गुरुवार, 6 नवंबर 2025 को भागलपुर हवाई अड्डा मैदान में एक चुनावी जनसभा को संबोधित किया और बिहार में एनडीए प्रत्याशियों के समर्थन में मतदान करने की अपील की। उन्होंने सभा में भागलपुर की 7 विधानसभा सीटों के अलावा पड़ोसी जिलों के मतदाताओं को भी संबोधित किया। बताया जाता है कि भागलपुर में पीएम मोदी की शौडो वार रणनीति से विपक्ष बेचैन हो चुका है क्योंकि उसका ग्राफ और नीचे गिर सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बिहार में उद्योगों का नया दौर शुरू हो रहा है जिसमें सेमीकंडक्टर निर्माण का काम भी शामिल है। उन्होंने एक करोड़ युवाओं को रोजगार देने का मास्टर प्लान तैयार करने की बात कही, महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए जीविका दीदी और लक्षपति दीदी योजनाओं का उल्लेख किया। बिजली बिल कम करने, स्थानीय थर्मल पावर परियोजना, पर्यटन को बढ़ावा देने और नाविकों के हितों को भी चर्चा की। सभा में महिलाओं और युवाओं की भारी भागीदारी रही जिन्हें मोदी-मोदी के नारों के साथ संबोधित किया गया।

### यहां से अंगवासियों को मोदी का मुख्य संदेश यह रहा कि

बिहार के मतदाताओं से एनडीए उम्मीदवारों को जिताने की अपील की गई। वहीं, रोजगार, महिला सशक्तिकरण, बुनियादी ढांचे, शिक्षा, और स्वास्थ्य में आगामी योजनाओं की घोषणा की गई। यही नहीं, बिहार में सेमीकंडक्टर निर्माण शुरू होने और

औद्योगिकीकरण को लेकर बड़ी प्रतिज्ञा जताई गई। साथ ही युवाओं के लिए रोजगार और महिलाओं के लिए वित्तीय प्रोत्साहन योजनाओं का विस्तार बताया गया। खास बात यह कि पूर्ववर्ती “जंगलराज” और कांग्रेस के शासनकाल की आलोचना करते हुए सुरासन विकास का उल्लेख किया गया।

देखा जाए तो भागलपुर की रैली को बीजेपी की बड़ी रणनीति की दृष्टि से आंका गया, जहां पास के जिलों में मतदान के दिन ही सभा रखकर स्पष्ट असर देने की कोशिश की गई। चूंकि चुनावी सभा में भारी भीड़ थी, खासतौर पर युवा और महिलाएं उत्साहित दिखीं। प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का फोकस बिहार में आर्थिक और औद्योगिक विकास, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और एनडीए की जीत को सुनिश्चित करने पर रहा।

इस प्रकार से प्रधानमंत्री मोदी की भागलपुर रैली ने स्थानीय चुनावी रणनीति को काफी प्रभावित किया है। मोदी ने जंगलराज, सुरासन, औद्योगिक विकास और महिला सशक्तिकरण के संदेश देकर एनडीए के पक्ष में मतदाताओं को गोलबंद करने की कोशिश की है। उनका भाषण सिर्फ भागलपुर पर नहीं, बल्कि आसपास के जिलों—मुंगेर और खगड़िया पर भी असर डालने की रणनीति के तहत दिया गया, जिससे एक साथ कई विधानसभा क्षेत्रों में माहौल बनाने की कोशिश दिखी।

कहना न होगा कि भागलपुर में मोदी का कार्यक्रम “शौडो वार” रणनीति का हिस्सा था, जिसमें मतदान वाले पड़ोसी जिलों में रैली रखकर टारगेट सीटों के

साथ-साथ बाहर के क्षेत्रों में भी अप्रत्यक्ष प्रभाव पैदा किया गया। एनडीए के साथ साथ भाजपा के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को भी इसका फायदा मिला, क्योंकि मोदी की रैली ने एनडीए के वोटों में आत्मविश्वास जगाया। खासकर महिलाओं और युवाओं को जंगलराज (राजद-कांग्रेस गठबंधन) का डर दिखाकर जोरदार गोलबंदी की गई।

वहीं, 2020 के चुनावी परिणामों के आधार पर, पिछली बार हारी हुई सीटों को इस बार जीतने के लिए मोदी ने सीधा अपील और स्थानीय हस्तियों व सांस्कृतिक प्रतीकों का बखाना किया। उन्होंने एनडीए के पक्ष में मतदान का माहौल बनाते हुए, आरजेडी—कांग्रेस गठबंधन की आपसी तनातनी और नेतृत्व विहीन राजनीति को जनता के सामने रखा गया, जिससे विपक्षी गोलबंदी कमजोर पड़ सकती है। जहां तक वोट रिएक्शन और संभावित असर का सवाल है तो महिलाओं और युवाओं की भारी भागीदारी से एनडीए प्रत्याशियों की स्थिति मजबूत हो सकती है, क्योंकि मोदी ने महिला योजनाओं और युवा रोजगार को मुख्य एजेंडा बनाया। खासकर मोदी के विकास और सुरासन के सीमित संदेश ने स्थानीय स्तर पर पिछली सरकारों के कथित घोटालों, अपहरण, फिरोती, और पलायन जैसे मुद्दों को उजागर कर विरोधी दलों को बैकफुट पर डाल दिया।

समझा जाता है कि रैली के तुरंत बाद पड़ोसी जिलों में मतदान होने के चलते, मोदी के संबोधन का मतदाताओं पर ताजा असर देखने को मिल सकता है—जिससे एनडीए को चुनावी लाभ मिलने की

संभावना बढ़ती है। मोदी की बातों ने भागलपुर व आसपास के क्षेत्रों में एनडीए के पक्ष में गोलबंदी, विपक्षी गठबंधन की प्रतिद्वंद्विता उजागर करने, और महिलाओं—युवाओं में मतदान के प्रति उत्साह बढ़ाने का रणनीतिक असर दिखाया है।

भागलपुर रैली का असर मुंगेर और खगड़िया के वोटों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। चूंकि मोदी की जनसभा मतदान के दिन के बिल्कुल करीब आयोजित की गई थी, यह “शौडो वार” रणनीति थी—जिसने भागलपुर के साथ-साथ मुंगेर और खगड़िया की उन सीटों को भी प्रभावित करने का लक्ष्य रखा जहाँ उसी दिन मतदान हुए। मोदी की भागलपुर रैली से मुंगेर की तीन विधानसभाओं—तारापुर, मुंगेर, और जमालपुर में एनडीए को फायदा मिल सकता है क्योंकि रैली का संदेश और बड़े नेताओं की मौजूदगी आसपास के जिलों में भी गूंज बनाती है।

तारापुर जैसी सीट पर एनडीए के बड़े चेहरे मैदान में हैं, रैली के संदेश से “जंगलराज” के डर और महिला-युवाओं के मुद्दे को लेकर गोलबंदी बढ़ी। मतदान के बाद के रूझान और सोशल चर्चा से लगता है कि स्थानीय स्तर पर यह असर मामूली से लेकर मध्यम दर्जे का हो सकता है, लेकिन अंतिम जीत/हार मतदान के बूध स्तर की समीकरण पर निर्भर करेगी। वहीं, खगड़िया का चार विधानसभा सीटों पर भी इस रैली का असर आउटरीच के रूप में दिख सकता है; यहाँ बीजेपी, जेडीयू और लोजपा के उम्मीदवार अलग-अलग जातीय और सामाजिक समीकरण में टकरा रहे हैं।

# गीता और मानस में समन्वय भाव

**डॉ. नीरज भारद्वाज**

भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण नाम को युगों-युगों से संत, महात्मा, योगी, योगीनी, ज्ञानी, गुरुस्थ आदि सभी ने गाया तथा सुना-सुनाया है। प्रभु के जीवन चरित्रों में दर्शन, आध्यात्म, भक्ति, योग, मनोविज्ञान आदि सभी गुण दिखाई देते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपने दिव्य दर्शन के साथ ज्ञान, भक्ति, कर्म आदि के मार्ग को बताया है। श्रीरामचरितमानस में प्रभु श्रीराम के जीवन चरित्र को गोस्वामी तुलसीदास ने बड़े ही सुंदर शब्दों में सामान्य जन की भाषा में लिख दिया है। विचार करें तो यह दोनों ही पावन-पवित्र ग्रंथ भारतीय संस्कृति और दर्शन के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। शैलीगत दृष्टि से दोनों तो गीता संस्कृत भाषा और श्लोकों में हैं, इसमें 700 दोहे हैं। श्रीरामचरितमानस चौपाई, दोहा, सोरठा और छंदों में है। इसमें सात कांड हैं। सात का संयोग दोनों में ही है। इन दोनों ग्रंथों में कई ऐसे विचार और भाव हैं, जो समान रूप से प्रकट होते हैं। दोनों ही ग्रंथ कर्म, भक्ति, ज्ञान, धर्म आदि के महत्व पर बल देते हैं। यह दोनों ही ग्रंथ भारतीय और वैश्विक

जनमानस को आत्मा के ग्रंथ हैं। इन दोनों दिव्य ग्रंथों का विश्व की सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं कि, जब जब होई धरम के हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमाना। तब-तब धरि प्रभु विविध करीरा, हरहिं दर्यानिधि सज्जन पीरा।। अर्थात् जब-जब पृथ्वी पर धर्म को हानि होती है, दुष्टों और अभिमानियों का प्रभाव बढ़ने लगता है। तब सज्जनों की पीड़ा को हरने के लिए कारुणिकानिधान प्रभु श्रीराम अलग-अलग रूपों में अवतार लेते हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि, यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानधर्मस्य प्रतापमग्नाज्यहमन्वज धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं धर्म की स्थापना के लिए, अपने आप को अवतार रूप में प्रकट करता हूँ। मानस में गोस्वामी जी लिखते हैं कि, राम कर्म के हेतु अनेका, परम विचित्र एक ते एका। इसका अर्थ है प्रभु श्रीराम जन्म के कई कारण हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण कारण है, भक्तों को दर्शन देना, उनके कष्ट हरना, उनका

उद्धार करना और असुरों का संहार करना।

गीता में भगवान कहते हैं कि, कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्माते तस्मैऽस्तु कर्मणि।। अर्थात् भगवान अर्जुन को कहते हैं कि कर्म करने का अधिकार तुम्हारा है लेकिन कर्म के फल का अधिकार नहीं। दूसरे शब्दों में समझें तो भगवान अर्जुन को कहते हैं कि तुम्हें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए, परिणाम के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए। रामचरितमानस में गोस्वामी जी लिखते हैं कि, कर्म प्रधान विस्व रचि राखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा।। कहने का भाव है कि ईश्वर ने संसार को कर्म प्रधान बना रखा है। जो जैसा करता है, वह वैसा ही फल चखाता है। विचार करें तो कर्म से किसी का पीछा छूटने वाला नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वर की सर्वव्यापकता दिखाई देती है, यद्यद्भूमितत्सत्त्वं श्रीमद्ूर्जितमेव वा। तत्तदेवागमन्त्वं मम तेजोऽशंसभवम्।। अर्थात् जो-जो भी ऐश्वर्ययुक्त, कान्तिमान और शक्तिशाली वस्तु है, उसे तुम मेरे तेज के अंश से उत्पन्न जानो। गीता में ही भगवान कहते हैं, अहं

सर्वस्य भ्रवोः। इसका अर्थ है मैं सभी का मूल कारण हूँ। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि अहम् आत्मा गुडाकेश सर्वभूतेश्चरित्यथ-अर्थात् अर्जुन, मैं सभी प्राणियों के हृदय में विराजमान आत्मा हूँ। गोस्वामी तुलसीदास रामचरितमानस में लिखते हैं कि हरि व्यपक सर्वत्र समाना। प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना। अर्थात् भगवान सब जगह समान रूप से व्यापक हैं, प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। देश, काल, दिशा में सभी जगह प्रभु का वास है।

दोनों ग्रंथों की समानताएं ही हमें बार-बार इन्हें पढ़ने-सुनने-गाने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। ज्ञानी जन कहते हैं कि, राम कृष्ण दोऊ एक हैं, अंतर नहीं निमेरे। उनक मन भीरौ है, इनके चपल विशेष। विचार करें तो दोनों ही दिव्य ग्रंथ मानव जीवन के उथान के लिए नैतिक, भिन्नतरक, आध्यात्मिक, दार्शनिक आदि सिद्धांतों का उपदेश देते हैं। यद्यपि इनकी प्रस्तुति के तरीके भिन्न हैं। गीता भगवान श्रीकृष्ण के मुखार्थवचन से प्रकट हुई है और श्रीरामचरितमानस भक्त के भाव से प्रकट हुई है।

# तस्वीर नहीं, व्यवस्था बदलनी है - निलंबन नहीं, इंसानियत बहाल करो

मध्यप्रदेश श्योपुर जिले के विजयपुर विकासखंड के तिरंगापुरा मिडिल स्कूल में मिड-डे मील की शर्मनाक हकीकत सामने आई है। धूप में खाने पर बैठे मासूम बच्चे, सामने बिछे रद्दी अखबार के टुकड़ों में जूट रहे खी रोटी, थोड़ी दाल/सब्जी, और ऊपर से अखबार पर छपी होगी — “विकास की रफ्तार दोगुनी” जैसी खबरें, जो उनके भूख और हालात की सच्चाई से बिल्कुल उलझती हुई लगती हैं। बच्चे हाथ बढ़ाते हैं, स्याही लगती है उंगलियों पर, जहर घुलता है खाने में। यह कोई काल्पनिक दृश्य नहीं है। यह उस वीडियो का सच्चाई है जो वायरल हुआ और पूरे तंत्र को हिला गया। पर असली सवाल यह नहीं कि यह हुआ — बल्कि यह है कि ऐसी सच्चाई अब तक छिपी कैसे रही? जिस दिन वीडियो सामने आया — उसी दिन निलंबन हुए। जिस दिन कैमरा चला — उसी दिन जांच बैठी। और जिस दिन लाखों लोगों ने देखा — उसी दिन “सख्त निर्देश” जारी कर दिए गए। यह कोई संयोग नहीं, यह व्यवस्था का डर है — कैमरे का डर, सोशल मीडिया का डर, जनता की नज़रों का डर। जब

तक कोई फ़ोन नहीं उठा, जब तक किसी बच्चे ने रिकॉर्ड नहीं किया — तब तक यह सब यूँ ही चलता रहा। तो सवाल उठता है — क्या यह सिर्फ एक स्कूल की गलती थी, या पूरे सिस्टम की मिलीभगत? ना जाने कब से बच्चों को रद्दी अखबार पर खाना परोसा जा रहा था, निरीक्षक कहीं थे? मॉनिटरिंग कमेंटी कहीं थी? और वह फंड, जो बच्चों के पोषण के नाम पर आता है —

बस एक बार गूगल पर “मिड-डे मील घोटाला” लिखिए — और सामने खुल जाएगी देश-प्रदेश के स्कूलों की कटु सच्चाई। कहीं दाल में कीड़े मिले, कहीं आटे में धुन, कहीं चाल में इल्लियाँ रेंगती दिखीं, कहीं सब्जी से सड़ांध उठी — और कहीं मासूम बच्चों को आधी रोटी में पूरा दिन काटना पड़ा। सवाल यह है — क्या हर बार एक वीडियो ही अँधेरे खोलेंगा? क्या हर गाँव को सच्चाई दिखाने के लिए एक पत्रकार चाहिए? नहीं। ज़रूरत है ऐसी निगरानी की मजबूत जंजीर की — जो हर स्कूल तक पहुँचे, हर रसोई में झाँके, हर थाली तक गिनती करे। ताकि सच्चाई कैमरे या वायरल वीडियो का मोहताज न रहे, जमीर की नज़र से देखी जाए।

निलंबन बस एक पर्दा है — जवाबदेही पर नहीं, शर्म पर डाला गया आवरण। चेहरे बदल दिए जाते हैं, लेकिन सिस्टम जस का तस रहता है। अगले हफ़्ते नया प्रभागी आएगा, और फिर वही पुराने कहानी दोहराई जाएगी। समाधान कार्रवाई नहीं, निगरानी है — वह भी स्थायी। हर स्कूल में सीसीटीवी हो, जिसकी लाइव फ़ीड अभिभावक अपने ऐप पर देख सकें। हर मिड-डे मील भुपु का ऑडिट हर 15 दिन में हो और रिपोर्ट जनता के सामने रखी जाए। हर बच्चे के अभिभावक को बिना सूचना के स्कूल में जाकर निरीक्षण करने का अधिकार मिले। और हर दिन एक नए भोजन की एक फ़ोटो अपलोड की जाए — जो पीएस और टाइमस्टैम्प सहित, ताकि जवाबदेही सिर्फ कागज़ों में नहीं, ज़मीनी हकीकत में दिखे।

ये बच्चे सिर्फ पेट नहीं भरते — वे देश का भविष्य गढ़ते हैं, सपनों को संवारते हैं, उम्मीदों को जीवन देते हैं। उनकी थाली केवल स्टैल की नहीं होती, वह सम्मान, समानता और अधिकार का प्रतीक होती है। पर जब कोई बच्चा अपनी बेंच बैठकर रद्दी अखबार पर खाना खाता है, तो वह निवाला नहीं खाता — अपना आत्मसम्मान

निगलता है। उसे सिखाया जाता है — “तेरी जगह नीचे है, तू दूसरी श्रेणी का है।” यह सिर्फ भूख की नहीं, आत्मविश्वास, गरिमा और सपनों की हत्या है। और हर ऐसी थाली, जिस पर रोटी से पहले अपमान परखा जाता है — उस पर पूरे तंत्र की नाकामी की छाप उभर आती है। आज एक वीडियो ने सिस्टम को हिला दिया — पर बदलाव वो नहीं जो कैमरे दिखाएँ, बदलाव वो है जो कैमरे नहीं बंद होने के बाद भी कायम रहे। अब वक्त है निलंबन की फाइलें बंद करने का, और जवाबदेही की रस्कीने हमेशा चालू रखने का। हर बच्चे की थाली में सिर्फ रोटी नहीं, सम्मान, बराबरी और ईश्याक परसोसनी का। क्योंकि वीडियो वायरल होते हैं, लेकिन जख्म हमेशा भीतर रह जाते हैं। क्योंकि कैमरे एक दिन बंद हो जाएँगे — पर बच्चे की नज़र, उसका सवाल, उसकी याद कभी नहीं बंद होगी। और जब वही बच्चा बड़ा होकर पुछेगा — “आप कहीं थें जब हमें अखबार पर खाना परोसा गया?” तो उस दिन जवाब तैयार रखना चाहिए — “हमने न तस्वीर नहीं, व्यवस्था बदली थी। हमने ऐसी सिस्टम बनाया था, जहाँ सच को वीडियो की ज़रूरत नहीं पड़ती।”

# रामायण, पौधे और पुस्तकें-बदलते समाज की नई भेंट संस्कृति

हमारे देश भारत को युगों-युगों से 'सोने की चिड़िया' कहा जाता रहा है। वैसे भी हमारी सनातन भारतीय संस्कृति में सोने का गहरा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है। वास्तव में, गोल्ल (सोने) में निवेश केवल एक निवेश ही नहीं, बल्कि पवित्रता, समृद्धि, और सौभाग्य का भी प्रतीक माना गया है। भारतीयों का, विशेषकर भारतीय महिलाओं का स्वर्ण धातु के प्रति गहरा लगाव भी सांस्कृतिक, आर्थिक और पारंपरिक कारणों से है, जहाँ इसे न केवल आभूषणों के रूप में बल्कि संपत्ति और निवेश के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता रहा है। शायद यही कारण है कि इस साल सोना बहुत ऊँचाईयों तक चढ़ा भी, हालाँकि, सोने के दाम में वृद्धि के कई कारण हैं, जिनमें वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता, भू-राजनीतिक तनाव और कमजोर डॉलर, केंद्रीय बैंकों द्वारा सोने की बढ़ती खरीदारी, उच्च मुद्रास्फ़टि, और सुरक्षित निवेश के रूप में सोने की मांग में वृद्धि आदि शामिल हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार 8 अक्टूबर 2025 को यह पहली बार \$4,000 प्रति औंस के पार गया था। हमारे देश में, 17 अक्टूबर को 24 कैरेट सोने की कीमत ₹1,30,874 प्रति 10 ग्राम के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई थी, हालाँकि 28 अक्टूबर 2025 को ये कीमतें घटकर ₹1,18,043 प्रति 10 ग्राम हो गई थी। ऐसे में हमारे समाज में बदलाव देखने को मिले। मसलन, हमारे यहाँ कुछ समाजों ने शान्दी-ब्याह या अन्य सामाजिक समारोहों में गहनों के लेन-देन पर रोक (सोने की कीमतें बढ़ने के कारण) लगा दी, तथा कई अन्य समाज इस पर विचार करने लगे। सच तो यह है कि सोने की कीमतों ने हमारे समाज के रीति-रिवाजों तक को पुनर्निर्धारित करने पर मजबूर कर दिया है। पहले शादियों,

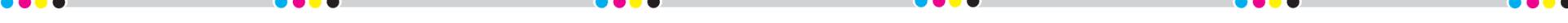
त्योहारों और विशेष अवसरों पर सोने का लेन-देन शुभ और सम्मान का प्रतीक माना जाता था, लेकिन पिछले कुछ समय से इसकी ऊँची कीमतों के कारण लोग इसके स्थान पर अब चांदी (हालाँकि, चांदी की कीमतों में भी अभूतपूर्व बढ़ोतरी देखी गई और पुष्य नक्षत्र पर 24 कैरेट सोना 1.30 लाख और चांदी 1.72 हजार रुपए किलो तक पहुंच गई थी) नकद राशि या अन्य उपहार देने लगे हैं। वास्तव में, समाज में यह बदलाव आर्थिक परिस्थितियों और समय की मांग को दर्शाता है। अच्छी बात यह है कि कई परिवार अब दिखावे से बचते हुए व्यवहारिकता को प्राथमिकता देने लगे हैं। उपहारों में उपयोगी वस्तुएँ जैसे इलेक्ट्रॉनिक आइटम, गृह उपयोगी की चीजें या मिफ्ट वाउचर आदि का चलन बढ़ गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां सोना पारंपरिक सुरक्षा का प्रतीक था, अब वहां भी लोग इसकी बढ़ती कीमतों से दूरी बना रहे हैं। गोल्ल की बढ़ती कीमत ने लोगों की प्राथमिकताओं में बदलाव लाया है और अब समाज इसे एक “ज़रूरत” से ज्यादा “लक्ज़री” के रूप में देखने लगा है। पिछले कुछ समय से लोग हल्के और कम कैरेट वाले सोने के गहनों को ज्यादा पसंद करने लगे हैं। वास्तव में, आजकल 9 या 14 कैरेट सोने का चलन तेजी से बढ़ रहा है। इसमें शुद्ध सोने की मात्रा कम और मिश्रण तबू ज्यादा होती है। इसी कारण यह 22 या 24 कैरेट सोने से बहुत सस्ता पड़ता है। विशेषकर युवाओं में फैशन ज्वेलरी के रूप में इसकी लोकप्रियता बढ़ी है। हल्का होने के कारण यह रोजमर्रा पहनने के लिए उपयुक्त है। डिजाइनर कंपनियों भी अब 9 कैरेट में नए मॉडल ला रही हैं। शादियों में भी कम बजट में इसे पसंद किया जाने लगा है। बढ़ती सोने की कीमतों के बीच यह एक किराजती विकल्प बन गया

है। सोने की कीमतों में बढ़ोतरी हुई तो कई जगहों पर शादियों में ज्यादा सोना देने या दिखावा करने पर रोक लगा दी गई, ताकि आम लोगों पर कर्ज का बोझ न बढ़े और समाज में बराबरी बनी रहे। परिवारों ने भी समझदारी दिखाते हुए पुराने गहनों को बदलकर नए गहने बनवाने का तरीका अपनाया है। इस लेखक ने एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में यह पढ़ा कि सोने की बढ़ती कीमतों ने समाज में नए रिवाजों को जन्म दे दिया है। अब लोग शादियों और विशेष अवसरों पर सोने-चांदी के गहनों के बजाय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रतीकों को अपनाते लगे हैं। इस क्रम में गुजरात में अहीर समाज ने परंपरा में बदलाव करते हुए गहनों की जगह तुलसी का पौधा भेंट करने की शुरुआत की, जो पवित्रता और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देता है। वहीं, दिल्ली में कई परिवार अब गीता और रामायण जैसे ग्रंथ भेंट कर आध्यात्मिकता और ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। इस लेखक ने हाल ही में एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में यह पढ़ा कि उत्तराखंड के कंधार, जोरसागर व इगुणा गांव में यह निर्णय लिया गया है कि शादी में सोने के तीन गहने (नथ, बाली और मंगलसूत्र) से ज्यादा गहने नहीं पहने सकेंगे और यदि कोई व्यक्ति इसका उल्लंघन करे तो हुए पाए जाते हैं तो इस पर पचास हजार रुपए तक जुर्माना लगाये जाने की बात कही गई है। इतना ही नहीं, हिंदी दैनिक के अनुसार साबरकांठा के डूंगरी गरालिया समुदाय ने सोने के गहनों पर रोक लगाई है तथा चांदी के गहनों को कम किया है। वहीं दूसरी ओर कच्छ के अहीर समुदाय ने सोने के हल्के गहनों पर जोर दिया है। अच्छी बात यह है कि अन्य समुदायों ने भी आभूषणों के लेन-देन की सीमा को तय किया है। गोल्ल की कीमतों में बढ़ोतरी के बाद समाजों में

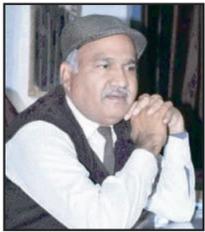
कृत्रिम ज्वेलरी का चलन भी बढ़ा है। इसके साथ ही, लोग अब सोने की जगह डिजिटल गोल्ल या गोल्ल बैंड, स्मूचुअल फंड्स आदि में निवेश करने लगे हैं। अब लोग सोने की जगह इलेक्ट्रॉनिक आइटम, पौधे, किरातों या अन्य चीजें उपहार में देने लगे हैं। इस परिवर्तन से समाज में दिखावे की प्रवृत्ति कम हुई है और समानता तथा सादगी की भावना को बढ़ावा मिला है। दूसरे शब्दों में कहें तो समाज में सादगी और व्यावहारिकता से विवाह और त्योहारों में फिजूलखर्ची कहीं न कहीं अवश्य ही कम हुई है। वास्तव में, सच तो यह है कि ये बदलाव दिखावे की संस्कृति से दूर, हमारे मूल्यों और संस्कृति की ओर लौटने का ही संकेत है। निश्चित ही, ऐसे बदलावों से सामाजिक दबाव भी कहीं न कहीं कम हुआ है और मध्यमवर्गीय परिवारों को काफी हद तक राहत भी मिली है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि समाज अब परंपरा के साथ व्यावहारिक संघों को भी अपनाते लगा है। बहरहाल, यह बात ठीक है कि भारतीयों का सोने-चांदी के गहनों के प्रति गहरा मोह रहा है, परंतु आज इन धातुओं की कीमतें इतनी अधिक बढ़ गई हैं कि हर व्यक्ति के लिए इन्हें खरीदना आसान नहीं रहा। पहले जहां लोग बेटियों की शादी में सोने के गहने देना गर्व की बात समझते थे, वहीं अब वही परंपरा भारी बोझ बनती जा रही है। गरीब तो दूर, मध्यम वर्गीय परिवार भी अब गहने खरीदने से पहले सो बार सोचने को मजबूर हैं। शान्दी-ब्याह में केवल हार्थक ही नहीं, बल्कि कपड़ों, सजावट, भोजन, संगीत कार्यक्रम और अन्य खर्चों में भी भारी वृद्धि हुई है। ऐसे में कर्ज लेकर दिखावे के लिए आयोजन करना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। अच्छी बात यह है कि समाज अब निरंतर एक नये बदलाव की ओर

अग्रसर हो रहा है। जहाँ कभी शादियों और उत्सवों में गहनों का प्रदर्शन प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता था, वहीं अब यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे कम होती जा रही है। बढ़ती कीमतों और आर्थिक विचारों ने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि दिखावे से अधिक महत्व सादगी का है। समाज अब बदलाव की ओर अग्रसर है, जहाँ भौतिकता की जगह आत्मीयता और संस्कारों का प्राथमिकता दी जा रही है। इस आलेख में उक्त पर चर्चा करके कि सच्चाई में गहनों के स्थान पर पुस्तकों, पौधों और धार्मिक ग्रंथों को देने की परंपरा शुरू की है। यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक और सांस्कृतिक चेतना का भी संकेत है। लोग अब समझने लगे हैं कि खुशियों को मॉल सोने-चांदी के गहनों से नहीं, बल्कि अपनत्व और प्रेम से आँसू जमा सकता है। इस सादगीपूर्ण दृष्टिकोण ने समाज में समानता और संयम की भावना को बढ़ावा दिया है। दिखावे और प्रतिस्पर्धा की जगह अब सरल जीवन की महत्ता को स्वीकारा जा रहा है। भौतिकता से दूर यह नया सोच समाज को एक स्वस्थ, संवेदनशील और संतुलित दिशा की ओर ले जा रहा है। आज का यह परिवर्तन केवल परंपराओं में नहीं, बल्कि सोच में भी क्रांति का प्रतीक बन गया है। वास्तव में, असली खुशी तो रिश्तों की आत्मीयता, परिवार के प्रेम और आपसी समझ में छिपी होती है, न कि सोने-चांदी की चमक में। जब हम दिखावे की जगह सादगी और भावनाओं को प्राथमिकता देते हैं, तभी जीवन में वास्तविक सौभाग्य मिलता है। इसलिए, हमें समाज में यह संदेश फैलाना चाहिए कि भव्य नहीं, बल्कि प्रेम, सम्मान और एकता ही जीवन की सच्ची संपत्ति है।

**सुनील कुमार महला, प्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**



# रोजगार संकट: अकादमी और उद्योग के बीच सहयोग पर पुनर्विचार



विजय गर्ग

**व्यावहारिक प्रदर्शन की कमी: कई शैक्षणिक कार्यक्रमों में छात्रों के लिए वास्तविक दुनिया की सेटिंग्स में सैद्धांतिक ज्ञान लागू करने का पर्याप्त अवसर नहीं होता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यावहारिक अनुभव की कमी होती है।**

वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक महत्वपूर्ण चुनौती का सामना करना पड़ रहा है जिसे अक्सर रोजगार संकट कहा जाता है स्नातक की बढ़ती संख्या के बावजूद, नजीक से स्नातक होने वाले छात्रों के पास आधुनिक कार्यस्थल में आवश्यक कौशल के बीच लगातार अंतर है। तेजी से विकसित प्रौद्योगिकी और गतिशील बाजार आवश्यकताओं के कारण यह असाध्य, शैक्षिक संस्थानों (अकादमी) और कॉर्पोरेट क्षेत्र (उद्योग) में मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

**संकट का मूल संकट प्राथमिकताएं और व्यावहारिकताओं में असंतुलन से उत्पन्न होता है** अकादमिक फोकस बनाम उद्योग की मांग: विश्वविद्यालय पारंपरिक रूप से मजबूत सैद्धांतिक आधार और विषय-विशेष ज्ञान प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। हालांकि, उद्योग तेजी से डिजिटल साक्षरता, आलोचनात्मक सोच, जटिल समस्या-समाधान, संचार और अनुकूलन क्षमता जैसे काम के लिए तैयार कौशल की सराहना करता है - जिसे अक्सर रनरस कौशलर या र21वीं सदी के कौशलर के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

अप्रचलित पाठ्यक्रम: शैक्षणिक शब्दावली अक्सर तकनीकी परिवर्तन की गति (जैसे, एआई, साइबर सुरक्षा, नवीकरणीय ऊर्जा) के साथ तालमेल रखने में संघर्ष करती है। इससे स्नातक कल की नौकरियों के लिए प्रशिक्षित हो जाते हैं।

व्यावहारिक प्रदर्शन की कमी: कई शैक्षणिक कार्यक्रमों में छात्रों के लिए वास्तविक दुनिया की सेटिंग्स में सैद्धांतिक ज्ञान लागू करने का पर्याप्त अवसर नहीं होता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यावहारिक अनुभव की कमी होती है।

लघु अवधि उद्योग दृश्य: कुछ कंपनियों दीर्घकालिक, स्थायी साझेदारी के बजाय परिसर में भर्ती जैसी अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देती हैं जो सहयोग से भविष्य के लिए तैयार प्रतिभा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर सकती हैं। पुनर्विचार सहयोग: साझा

जवाबदेही समाधान छिटपुट अतिथि व्याख्यानों से परे आगे बढ़कर सह-निर्माण और साझा जवाबदेही का मॉडल स्थापित करने के लिए प्रेरित होता है। इसमें पहलों की एक श्रृंखला शामिल है

**पाठ्यक्रम सह-डिजाइन** नियुक्तियों, विश्वविद्यालयों और नौति निर्माताओं को नियमित रूप से शब्दावली की समीक्षा करने चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि अकादमिक सामग्री वर्तमान और भविष्य की उद्योग आवश्यकताओं के अनुरूप हो, जिससे आवश्यक सॉफ्ट कौशल को शामिल किया जा सके।

युअल एजुकेशन सिस्टम जैसे कार्यक्रम (जैसा कि जर्मनी में देखा गया है) एक सफल मॉडल प्रदान करते हैं, जो व्यावहारिक क्षमता सुनिश्चित करने के लिए कक्षाओं की शिक्षा को कंपनी-आधारित प्रशिक्षितियों के साथ मिलाता है।

**अनुभवपूर्ण शिक्षण और विसर्जन** सभी विषयों में अनिवार्य और संरचित इंटरशिप/को-ऑप कार्यक्रम संस्थागत किए जाने चाहिए, जिससे छात्रों को संरचित प्रतिक्रिया तथा वास्तविक विश्व परियोजना अनुभव मिल सके।

संकाय विसर्जन कार्यक्रम (सबैटिकल्स या अल्पकालिक उद्योग परियोजनाएं) शिक्षकों को अपनी विशेषज्ञता अद्यतन करने की अनुमति देते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे पुराने सिद्धांतों के बजाय वर्तमान प्रथाओं का शिक्षण दें।

**प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचा साझा करना** उद्योग अकादमिक संस्थानों में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी, प्रयोगशालाओं और केस स्टडीज का योगदान दे सकता है, जिससे परिसर के बुनियादी ढांचे को उद्योग-अनुरूप शिक्षण वातावरण में बदल दिया जा सके।

संयुक्त रूप से विकसित, उद्योग-प्रमाणित मांड्यूल (जैसे सैमस मेचट्रोनिक्स अकादमी मॉडल) छात्रों को उन्नत भूमिकाओं में तेजी से ले जा सकते हैं।

**डेटा-आधारित प्रतिक्रिया लूप**

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

पूर्व छात्रों के करियर परिणामों और कौशल प्रगति को ट्रैक करने के लिए प्रणालियों स्थापित करना महत्वपूर्ण है। यह डेटा विश्वविद्यालयों के लिए अपने कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने और उद्योग को विशिष्ट कौशल घाटे से निपटने के लिए एक साक्ष्य-आधारित तंत्र प्रदान करता है। सच्ची सहकार्य के लाभ अकादमिक जगत और उद्योग के बीच एक मजबूत साझेदारी महत्वपूर्ण लाभ देती है। अकादमिक लॉब, उद्योग लॉब :: बेहतर प्रसंगिता: बेहतर छात्रों को आकर्षित करता है और संस्थागत प्रतिष्ठा में सुधार करता है। :: प्रतिभा तक पहुंच: पूर्व प्रशिक्षित, तैनात करने के लिए तैयार प्रतिभा पाइपलाइन विकसित करता है। रोजगार में वृद्धि: अत्यधिक प्रसंगिक, मांग वाले तकनीकी और नरम कौशल। अनुप्रयोगित अनुसंधान: उद्योग द्वारा वित्त पोषित परियोजनाओं और वास्तविक दुनिया के शोध डेटा को सुरक्षित रखता है। नवाचार: नए समाधानों को चलाने के लिए शैक्षणिक विशेषज्ञता और अत्याधुनिक अनुसंधान तक पहुंच। :: बेहतर मुआवजा: तेजी से करियर प्रगति और अधिक कमाई की क्षमता। • उन्नत संकाय: शिक्षकों को उद्योग के रुझानों और प्रौद्योगिकी के साथ अद्यतित रखना सुनिश्चित करता है। :: प्रशिक्षण लागत में कमी: भर्ती के बाद स्नातक को कम ऑनबोर्डिंग और अपग्रेड की आवश्यकता होती है। अनुकूलनशीलता: गतिशील रोजगार बाजार में जीवन भर सीखने के लिए सुसज्जित। अंत में, रोजगार के लिए चुनौती प्रतिभा का संकट कम है और संरचनात्मक संरक्षण से अधिक है। गहरी, सतत और पारस्परिक रूप से निम्न-द्वार सह-निर्माण के मॉडल को अपनाकर अकादमिक जगत और उद्योग कुशलतापूर्वक ढंग से कौशल अंतर का निर्माण कर सकते हैं, जिससे शिक्षा आर्थिक विकास के लिए एक शक्तिशाली इंजन बन सकती है तथा यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि स्नातक न केवल योग्य हों बल्कि वास्तव में काम करने के लिए तैयार भी हों। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस सहयोग के एक विशिष्ट पहलू पर ध्यान केंद्रित करूं, जैसे नरम कौशल की भूमिका या सफल साझेदारी का केस स्टडी?

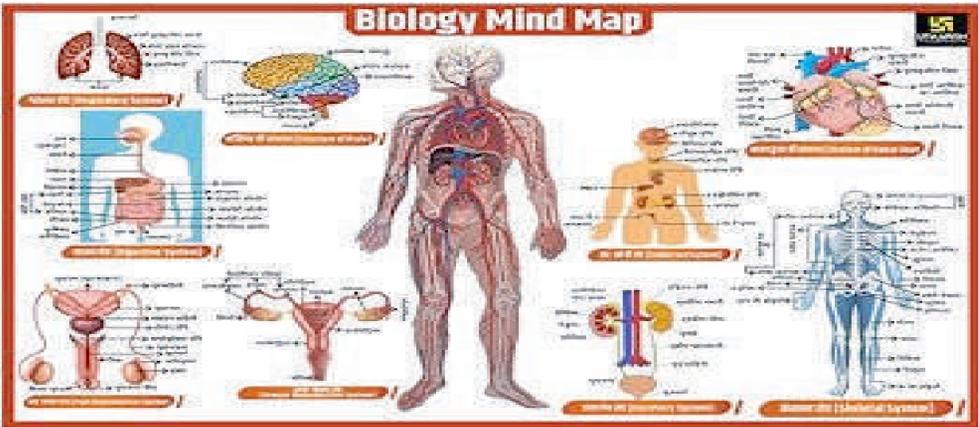
# भय का विज्ञान: जीवविज्ञान और जीवित रहने की प्राथमिक कुंजी

डॉ विजय गर्ग

भय, यह अंतर्निहित, खतरों की तत्काल प्रतिक्रिया सबसे मूलभूत और आवश्यक मानवीय भावनाओं में से एक है। डर की जीवविज्ञान केवल एक कमजोरी से दूर है, यह एक अत्यधिक परिष्कृत अस्तित्व तंत्र है जिसे लाखों वर्षों के विकास में हमें नुकसान से बचाने के लिए ठीक-ठाक किया गया है। भय का जीवविज्ञान: लड़ाई-या उड़ान प्रतिक्रिया भय का विज्ञान मस्तिष्क और शरीर के भीतर एक त्वरित, कैस्केड जैसी प्रतिक्रिया में जड़ है, जिसे मुख्य रूप से लिम्बिक प्रणाली द्वारा व्यवस्थित किया जाता है। 1। मस्तिष्क की अलार्म प्रणाली: अमीग्डाला

प्रारंभिक मूल्यांकन: जब संवेदी इनपुट (देखना, ध्वनि, गंध) संभावित खतरों का संकेत देता है तो जानकारी तालामास में तेजी से दी जाती है। तालामास फिर दो प्राथमिक मार्गों के साथ संकेत भेजता है। एक्सप्रेस रूट: गति के लिए, मस्तिष्क में नौबू आकार के न्यूरोन्स का एक सीधा, अवचेतन संकेत भेजा जाता है। अमिग्डाला मस्तिष्क का रजोखिम डिटेक्टर है और खतरा का शीघ्र मूल्यांकन करता है। यह त्वरित, अंतर्निहित मार्ग मस्तिष्क के सचेत, सोचने वाले भाग (कोर्टेक्स) को बायपास करता है, जिससे लगभग तत्काल प्रतिक्रिया होती है।

विचार मार्ग: तर्कसंगत प्रसंस्करण के लिए संवेदी कचम में भी धीमा और अधिक विस्तृत संकेत भेजा जाता है। यह सचेत मार्ग हमें मूल्यांकन करने की अनुमति देता है कि क्या खतरा वास्तविक है (उदाहरण के लिए, यह केवल एक डीरी है, सांप नहीं।) हार्मोन कैस्केड: एड्रेनालाईन और कोर्टिसोल यदि अमाइग्डाला को खतरा महसूस होता है, तो यह हाइपोथैलमस को संकेत देता है और तनाव प्रतिक्रिया प्रणाली की शुरुआत करता है जिसे हाइपोथैलमिक-पिट्यूटरी-अड्रेनल (एचपीए) अक्ष तथा सहानुभूति तंत्रिका प्रणाली (एसएनएस) के रूप में जाना जाता है। यह क्लासिक रलडाई-या उड़ानर प्रतिक्रिया का



सक्रियण है एसएनएस रक्तप्रवाह में एपिनेफ्रइन (एड्रेनलाइन) और नोरेड्रेनालिन (नोरेड्रेलिन) को तुरंत जारी करने के लिए adrenal ग्रंथियों को संकेत देता है। इससे शरीर को तीव्र शारीरिक क्रिया के लिए तैयार करने के लिए व्यापक भीतिकी परिवर्तन होते हैं हृदय संबंधी: मुख्य मांसपेशियों में ऑक्सीजनयुक्त रक्त पंप करने के लिए हृदय गति और रक्तचाप बढ़ जाता है। श्वसन: ऑक्सीजन की खपत बढ़ाने के लिए सांस लेने में तेजी आती है। चयापचय: भंडारित चीनी (ग्लूकोज) अचानक ऊर्जा के लिए जारी की जाती है। संवेदनाएं: छात्र विस्तारित होते हैं (टनेल दृष्टि) और परिधीय रक्त वाहिकाएं सिंकुड जाती हैं (एक अचानक ठंड या चमक का कारण बनती है) ताकि

खून महत्वपूर्ण अंगों और अंगों तक पहुंचा जा सके। पाचन/गैर-महत्वपूर्ण: पाचन और लवण जैसी गतिविधियों को अस्थायी रूप से रोक दिया जाता है (मस्किंग या सूखे मुंह की भावना)। विकासवादी उद्देश्य: क्यां भय जीवित रहने की कुंजी है भय एक अत्यधिक संरक्षित भावना है, जिसका अर्थ है कि यह प्रजातियों की विस्तृत श्रृंखला में मौजूद है और इसे स्पष्ट, अपरिहार्य कार्य के लिए विकास द्वारा संरक्षित किया गया है: अस्तित्व और प्रजनन को बढ़ावा देना। अनुकूली व्यवहार: तत्काल लड़ाई-या-उड़ान प्रतिक्रिया शिकारियों से बचने या जीवित रहने में डालने वाली किसी चुनौती पर विजय पाने का सबसे अच्छा मौका देती है। जो लोग सही चीजों से डरते थे (सिंहा, ऊंचाई, जहरीली जामुन) वे ही थे जिन्होंने अपने जीन को पारित करने के लिए जीवित रहे। सीखने और स्मृति: भय प्रतिक्रिया हिप्पोकैम्पस (मेमोरी सेंटर) और अमिग्डाल के साथ गहराई से

जुड़ी हुई है। डरावना अनुभव स्मृति में शक्तिशाली रूप से एन्कोड किए जाते हैं, जिससे हम भविष्य में समान खतरों को जल्दी पहचान सकते हैं और उनसे बच सकते हैं - एक महत्वपूर्ण सीखने की तंत्र। सामाजिक चेतावनी: भय संचारत्मक भी हो सकता है। चेहरे की अभिव्यक्तियों (जैसे, चौड़ी आंखें) या आवाजों के माध्यम से डर प्रदर्शित करना सामाजिक समूह में दूसरों को छिपे हुए खतरों से सचेत कर सकता है, जिससे जीवित रहने की सामूहिक संभावना बढ़ जाती है। मूलतः, भय एक त्वरित-कार्य करने वाली जैविक बीमा पॉलिसी है। हालांकि यह कभी-कभी आधुनिक उत्तेजनाओं (एक तनावपूर्ण समय सीमा, एक हॉरर फिल्म) द्वारा ट्रिगर किया जा सकता है, लेकिन इसका मौलिक तंत्र रज्जुवृत्ति के युद्ध में इसकी प्राचीन जीवन रक्षक भूमिका का प्रमाण बना हुआ है

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार,

# संतुलन का पाठ : डॉ विजय गर्ग

किताबों के पन्ने पलटते हुए अंगुलियों पर जमी स्याही की हल्की परछाईयां, नई किताब की स्याही और कागज की मिली-जुली खुशबू या पुरानी किताबों की पीली पड़ चुकी पंक्तियों से आती महक मीठी गंध...! कभी ये सब हमारे अध्ययन की दुनिया का हिस्सा हुआ करते थे। किताब केवल ज्ञान का स्रोत नहीं थीं, बल्कि एक भावनात्मक अनुभव भी थीं। उस समय पढ़ाई का अर्थ था किताब के पन्ने पलटते जाना, धीरे-धीरे अक्षरों को आत्मसात करना और अपने ही बनाए संसार में खो जाना। समय बदला। आज वही किताबें हमारी जेब में, मोबाइल स्क्रीन पर या टैबलेट के चमकते डिजिटल पन्नों में समा गई हैं। हम 'स्वाइप' करके पन्ने पलटते हैं और 'सर्च' बटन दबाकर तुरंत अपनी जरूरत की जानकारी पा लेते हैं। यह सुविधाजनक है, तेज है और आधुनिक समय की मांग भी। पर सवाल यह है कि क्या डिजिटल पन्ने किताबों की उस खुशबू और स्पर्श को पूरी तरह बदल पाए हैं?

**कागज का मोह** कागज पर छपी किताबें सिर्फ पढ़ने का साधन नहीं, बल्कि जीवन का हिस्सा होती हैं। किसी उपन्यास को पढ़ते समय चाय का कप हाथ में हो और किताब गोद में, यह दृश्य न जाने कितने लोगों के जीवन की यादों में दर्ज है। किताबें हमें धैर्य सिखाती हैं। पन्ने पलटने की धीमी गति हमें शब्दों के साथ जीने का अवसर देती है। किताबें स्मृतियों का खजाना भी

होती हैं। पुरानी किताब के पन्नों पर बने निशान, किनारों पर लिखी गई टिप्पणियां या बीच में रखी सुखी पत्तियां, वर्षों बाद भी हमें अतीत की यात्रा करवा देती हैं। यही वह भावनात्मक जुड़ाव है जो डिजिटल पन्नों में अक्सर नदारद होता है। जैसा कि प्रसिद्ध अमेरिकी लेखिका जेन आस्टिन ने कहा था- 'किताबों से बिना प्रेम किए जीना वैसा ही है, जैसा आंखें होते हुए भी प्रकाश से वंचित रहना'। इसके अलावा, शोध बताते हैं कि कागज पर पढ़ने से हमारी एकाग्रता और स्मरण शक्ति अधिक गहरी होती है। जब हम स्क्रीन पर पढ़ते हैं तो लगातार अपने वाले 'नोटिफिकेशन' की चमकती रोशनी हमें विचलित कर देती है, जबकि किताब का पन्ना हमें शांति और सन्नाटा देता है। डिजिटल पन्नों का आकर्षण यह भी सच है कि आज की तेज रफ्तार जिंदगी में डिजिटल पन्नों ने पढ़ाई को नया आयाम दिया है। अब किसी दुर्लभ किताब को पाने के लिए महीनों इंतजार नहीं करना पड़ता। बस कुछ सेकंड में ई-बुक डाउनलोड हो जाती है। छात्र-छात्राएं हजारों पन्नों का अध्ययन एक छोटे-से 'डिवाइस' या थैंग में लेकर घूम सकते हैं। डिजिटल पन्ने पर्यावरण के अनुकूल भी हैं, क्योंकि कागज बनाने के लिए पेड़ों की कटाई कम हो सकती है। साथ ही, डिजिटल मंच पर खोज करना बेहद आसान है। किसी विशेष विषय या शब्द को ढूंढना महज कुछ पल का काम है, जबकि यही प्रक्रिया मोटी किताबों में समय ले सकती थी। डिजिटल युग

ने अध्ययन को लोकतांत्रिक भी बनाया है। जहां पहले अच्छी किताबें केवल बड़े शहरों या महंगे पुस्तकालयों में मिलती थीं, वहीं अब इंटरनेट पर उपलब्ध मुफ्त ई-किताबें और आनलाइन लेख दुनिया के किसी भी कोने में बैठे पाठक तक पहुंच जाते हैं। पीढ़ियों का फर्क आज की युवा पीढ़ी मोबाइल और टैबलेट पर पढ़ने की अधिक आदी हो गई है। उनके लिए किताब का वजन उठाना बोझिल लगता है, जबकि स्क्रीन पर पढ़ना सरल और आकर्षक। दूसरी ओर, पुरानी पीढ़ी अब भी मानती है कि किताब की आत्मा उसकी छपाई और खुशबू में बसी होती है। 'यही कारण है कि चरों की अलमारियों में रखे उपन्यास, धार्मिक ग्रंथ या कक्षा की पाठ्यपुस्तकें अब भी अपनी जगह बनाए हुए हैं। यह पीढ़ीगत अंतर केवल तकनीक का सवाल नहीं है, बल्कि अनुभव का भी है। किताब के साथ बिताया गया समय एक भावनात्मक रिश्ता बनाता है, जबकि डिजिटल पन्ने हमें सुविधा और त्वरित ज्ञान तो देते हैं, लेकिन वह अपनापन नहीं, जो किताबें देती हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार कहा था- 'जिसके पास किताबें और कल्पनाशक्ति है, वह कभी अकेला नहीं हो सकता।' यह कथन आज भी उतना ही सच है। चाहे कागज की किताब हो या डिजिटल स्वरूप, अध्ययन हमें अकेलेपन से निकालकर नए संसार में ले जाता है। संतुलन की राह सवाल यह नहीं होना चाहिए कि किताबें

बेहतर हैं या डिजिटल पन्ने। असली सवाल यह है कि हम दोनों का संतुलित उपयोग कैसे करें। गहरी समझ, साहित्यिक आनंद और आत्मिक शांति के लिए कागज की किताबें हमेशा प्रासंगिक होंगी। वहीं त्वरित जानकारी, शोध या आधुनिक संसाधनों के लिए डिजिटल पन्ने हमारी जरूरत पूरी करेंगे। एक विद्यार्थी अगर परीक्षा की तैयारी कर रहा है तो डिजिटल सामग्री से उसे नवीनतम जानकारी मिल सकती है, लेकिन वही विद्यार्थी अगर किसी कवि की रचनाओं में डूबना चाहता है तो कागज की किताब उसे अधिक आत्मसंतोष देगी।

इसलिए हम देख रहे हैं कि अध्ययन की आदतें अब बदल रही हैं और यह स्वाभाविक भी है। मगर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किताबें केवल कागज और स्याही का मेल नहीं होतीं, वे भावनाओं, अनुभवों और स्मृतियों की संरक्षक भी होती हैं। डिजिटल पन्ने सुविधाओं की दुनिया हैं। इसलिए जरूरत है कि हम दोनों का संतुलित उपयोग करें। बच्चों को स्क्रीन पर उपलब्ध ज्ञान से परिचित कराएं, पर साथ ही उन्हें किताबों के पन्ने पलटने का आनंद भी दें, क्योंकि आखिर पढ़ाई का उद्देश्य केवल जानकारी हासिल करना नहीं, बल्कि जीवन के गहरे अनुभवों को आत्मसात करना है। कागज की खुशबू और डिजिटल पन्नों की चमक दोनों ही हमारी अध्ययन संस्कृति का हिस्सा हैं। बस हमें यह याद रखना।



# क्लाउड सीडिंग: इंजीनियरिंग आसमान से बारिश

विजय गर्ग

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन दुनिया भर में वर्षा के पैटर्न को बदलता रहता है, वैज्ञानिक सूखे और पानी की कमी से निपटने के लिए लगातार नवीन मौसम संशोधन तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। ऐसी एक तकनीक क्लाउड सीडिंगर आकर्षक और विवादास्पद दोनों है, जो प्रकृति को प्रभावित करने की मानवीय इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है।

**क्लाउड सीडिंग क्या है ?**

क्लाउड बीज एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य कृत्रिम रूप से वर्षा उत्पन्न करना है। इसमें पदार्थों को वायुमंडल में फैलाया जाता है - आमतौर पर चांदी का आयोडीन, पोटेशियम का आयोडीन या सोडियम क्लोराइड। ये कण संपीड़न नाभिक के रूप में कार्य करते हैं, जिसके चारों ओर बादलों में नमी जमा हो सकती है और बड़ी बूंदें बन सकती हैं, जो अंततः बारिश या बर्फ की तरह गिरती हैं।

इन कणों को उपयुक्त बादलों में वितरित करने के लिए आमतौर पर विमान, रॉकेट या ग्राउंड-आधारित जनेरेटर का उपयोग किया जाता है। अवरधारणा सरल है: यदि प्राकृतिक बादल पर्याप्त बारिश नहीं पैदा करते हैं, तो शायद थोड़ा सा रनडजर् मदद कर सकता है।

**यह काम किस प्रकार करता है**

क्लाउड बीज प्रभावी होने के लिए, कुछ वायुमंडलीय परिस्थितियां होनी चाहिए - विशेष रूप से



# अरबों डॉलर का है कुत्तों के बाजार का अर्थशास्त्र

-हरीश शिवनानी

भारतीय समाज और मीडिया में पिछले तीन महीनों से कुत्ते चर्चा में छाए हुए हैं। यह पहली बार है कि समाचार-पत्रों के मुखपृष्ठों और टीवी के प्राइमटाइम में नेताओं के बराबर ही कुत्तों को जगह मिली है। कृपया खुश गलत न समझें, मेरा इरादा इनका तुलनात्मक अध्ययन नहीं है। दरअसल ईसाओं की तरह ही कुत्तों की भी नस्लें होती हैं, इनमें भी वर्ग-भेद होता है। कुछ खुशनुमा सीव एलीट होते हैं तो अधिकांश वंचित वर्ग यानी गली-कूचों में पलने वाले, जिन्हें 'गली का आवारा कुत्ता' यानी 'स्ट्रे डॉग' कहा जाता है। पिछले लंबे समय से आवारा कुत्तों की बढ़ती हिंसक घटनाओं के कारण सात नवंबर को सुप्रिम कोर्ट ने 'ईसानी जल नपुआओं से ऊपर हैं' बताते हुए उन्हें सार्वजनिक स्थानों, स्कूलों, कॉलेजों, अस्पतालों, बस-रेलवे स्टेशनों, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, हाईवे और एक्सप्रेस वे से हटा कर इन्हें शेल्टर हाउस में भेजने के निर्देश हैं। आवारा कुत्तों से अलग हटकर बात की जाए तो वैश्विक स्तर पर 'कुत्तों का अर्थशास्त्र' या 'डॉग इकोनॉमी' पेट केयर इंडस्ट्री का एक प्रमुख हिस्सा है, जो कुत्तों से जुड़े उत्पादों, सेवाओं और बाजार से जुड़ी है। जिसमें भोजन, प्रीमियम, स्वास्थ्य सेवा और सामान शामिल हैं। 2024 में वैश्विक 'पेट बिजनेस इंडस्ट्री' का आकार 360 बिलियन डॉलर से अधिक हो चुका है। यह इंडस्ट्री तेजी से बढ़ रही है। 2025 में ही लगभग 273.42 अरब डॉलर का बिजनेस अनुमानित है, जिसमें कुत्तों से जुड़े उत्पाद और सेवाएं 40-

50 फ्रीसदी हिस्सा रखती हैं, ये आंकड़े वैश्विक बाजार के हैं जिनमें कुत्ते पेट सबसे बड़े सेगमेंट (लगभग 50 प्रतिशत) हैं। कुत्तों से जुड़े कारोबार के अनेक आयाम हैं। अमेरिकन पेट प्रोडक्ट्स एसोसिएशन के अनुसार खाना और ट्रीट्स सबसे बड़ा सेगमेंट है। प्रीमियम, ऑर्गेनिक और स्पेशल डाइट वाले उत्पाद लोकप्रिय हैं। इसका अनुमानित कारोबार 42.59 अरब डॉलर है। सामान्य खाने जिसमें चिकन, मीट, ब्रेडसर्बिचियाँ और अनाज आदि होते हैं, उनका कुल बाजार 158.42 अरब डॉलर का है। स्पल्लाईज, खिलाएँ और एक्ससेसरीज को ही लें, इसमें कॉलर, लीड, बेड, खिलाएँ, कपड़े और ट्रेनिंग प्रोडक्ट्स शामिल हैं। पेट केयर और वैक्सीन, दवाएँ और हेल्थ प्रोडक्ट्स का कारोबार 39.8 अरब डॉलर तक पहुंच चुका है। कुत्तों के साज-शुभारा के लिए विशेष आउटलेट्स भी बहुत आम हो चुके हैं। इन्हें 'डॉग प्रीमियम सैलून', 'पेट स्पा' या 'मोबाइल प्रीमियम सर्विस' कहा जाता है। इस फ़ोल्ड में अब उच्च शिक्षित युवा गंधीरता से आगे आ रहे हैं। क्रिकेट लीजेंड रचिन तेंदुलकर की होने वाली बहु सानिया चंडोक ने मुंबई में प्रीमियम पेट स्पा खोल दी है। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई करने के बाद अर्जुन तेंदुलकर की मंगेतर सानिया 'मिस्टर पॉज' की फाउंडेशन चुकी है जो एक प्रीमियम पेट सैलून एंड स्पा सेंटर है। जहां फर वाले पालतू जानवरों यानी कुत्तों और बिल्ली को लक्जरी सुविधाएं मिलती हैं। यहां इन जानवरों की हेयर कटिंग और स्पा के अलावा शैम्पू,

दवाइयाँ, विटामिन सप्लिमेंट्स, खाने-पीने के सामान के साथ-साथ खिलाएँ और यहां तक कि कपड़े भी मिलते हैं। भारत में कुत्तों से जुड़े उत्पादों का वैश्विक सालाना कारोबार 2025 में 100 अरब डॉलर से अधिक होने का अनुमान है, जो 2030 तक 150 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। वैश्विक स्तर पर ये बाजार 2025 में 7.26 अरब डॉलर का है और अमेरिका, यूके, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में हजारों ऐसे सैलून हैं। भारत में भी दिल्ली, मुंबई जैसे शहरों में पेट स्पा बढ़ रहे हैं। अब तो पेट्स का बीमा भी होने लगा है। पेट इंश्योरेंस इंडस्ट्रीज के मुताबिक इस बाजार के 2025 तक 80 लाख डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। प्रौद्योगिकी के तहत स्मार्ट कॉलर, जीपीएस टैग और पालतू जानवरों के लिए ऐप जैसे तकनीकी भी इस उद्योग में शामिल हो चुकी हैं। इसके साथ ही देश में पालतू जानवरों के प्रशिक्षण और वॉर्डिंग सर्विस भी बड़ा बिजनेस बनती जा रही है। यह तो हुई एलीट क्लास कुत्तों से जुड़े कारोबार की बात। अब महत्वपूर्ण है, कुत्तों से जुड़ी प्रमुख बीमारियाँ और उनसे जुड़े फार्मास्यूटिकल बिजनेस की चर्चा, जो कर्मचारियों को सालाना अरबों डॉलर का राजस्व देती हैं। वैश्विक पशु चिकित्सा (वेटरनरी) फार्मा इंडस्ट्री का एक बड़ा हिस्सा है, जो 2025 में कुल 47.25 अरब डॉलर का बाजार है। इसमें कुत्तों से जुड़ी बीमारियाँ जैसे वैक्सीन, पैरासाइट कंट्रोल और कैन्सर ट्रीटमेंट प्रमुख हैं। कुत्तों की कुछ बीमारियों की दवा और इलाज से कंपनियों को बड़ा बिजनेस मिलता है।

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

नुआपाड़ा/भुवनेश्वर, : नुआपाड़ा उपचुनाव कठिन परिस्थितियों में होने जा रहा है। इस महीने की 11 तारीख को नुआपाड़ा की जनता अपने विधायक का चुनाव करेगी। आज चुनाव प्रचार थम रहा है और 14 तारीख को नतीजे घोषित किए जाएंगे। उपचुनाव को लेकर नुआपाड़ा की जनता में काफी उत्साह है। प्रदेश अध्यक्ष श्री मनमोहन सामल ने चुनाव प्रचार प्रक्रिया के शांतिपूर्ण और स्वस्थ वातावरण में संपन्न होने पर सभी मतदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया है। नुआपाड़ा जिला कार्यालय में आयोजित एक प्रस वार्ता में श्री सामल ने कहा कि 'नुआपाड़ा का संतुलित और समग्र विकास सिर्फ वादा नहीं, यह हमारी प्रतिबद्धता है'। पिछले आम चुनावों में ओडिशा की जनता ने भाजपा को 21 से 20 सांसद सीटें दीं, वहीं राज्य में पहली बार अकेले सरकार बनाने का अवसर दिया है। हमने जो 21 चुनावी वादे किए थे, उनमें से 11 को पूरा करने में हम सफल हुए हैं। बाकी वादे भी हम जल्द ही पूरे करेंगे। हमने जो कहा है, उसे पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। नुआपाड़ा क्षेत्र की 75 हजार माताओं-बहनों को सुभद्रा योजना का लाभ मिला है, वहीं 45 हजार से अधिक किसान परिवारों को प्रति किंवाट धान पर 3100 रुपये दिए जा रहे हैं। वृद्धावस्था और दिव्यांग भूता के रूप में 3500 रुपये दिए जा रहे हैं। राज्य में 15 लाख हेक्टेयर चाय भूमि की सिंचाई का लक्ष्य रखा गया है और अकेले नुआपाड़ा के लिए 800 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

खरियार रोड को नगरपालिका और कोमना को एनएसी घोषित किया गया है, जबकि कोमना में उप-पंजीयक कार्यालय खोला गया है। नुआपाड़ा के लिए 1421 करोड़ रुपये की घोषणा की गई है, जिसमें पर्यटन, सिंचाई आदि पर जोर दिया गया है। नुआपाड़ा को मछली पालन का केंद्र बनाया जाएगा और इसके लिए एक मत्स्य महाविद्यालय स्थापित किया जाएगा। नुआपाड़ा रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन में तब्दील किया जाएगा। बरगढ़-नुआपाड़ा रेलवे परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण अंतिम चरण में है। जिले में कृषि आधारित उद्योगों को प्राथमिकता दी जाएगी। सुनाबेड़ा में औषधीय वृक्षों के रोपण को प्राथमिकता दी जाएगी। खरियार मार्ग पर एक आधुनिक अटल बस स्टैंड बनाया जा रहा है। एक खेल परिसर का निर्माण किया जा रहा है। यात्रियों की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए एक आरओबी (रेल ओवर ब्रिज) स्थापित किया जा रहा है, श्री सामल ने कहा।



यूएन को जिए 7 मार्च 2009 को क्या हुआ था। वह व्यक्ति कौन है जिसने इन शब्दों का इस्तेमाल किया था? 2009 में, बीजद ने अत्याचार किए। पूरा राज्य जानता है कि राज्य के लोग अत्याचारों के दोषी हैं। सकारात्मक राजनीति करने के बजाय, बीजद श्रेयस्त्रोह और चोरी-चुराई जैसे घटिया शब्द कहकर मुख्य मुद्दे से बच रही है। कांग्रेस और बीजद दोनों पार्टियाँ, जो 75 वर्षों से अधिक समय से सत्ता में हैं, उन्हें आत्मचिंतन करना चाहिए कि उन्होंने नुआपाड़ा के लोगों के लिए क्या किया है

और आम जनता के सामने इसका हिसाब देना चाहिए। ऐसा करने के बजाय, वे गुमराह करने के लिए भाजपा और व्यक्तियों पर आधारित सस्ते आरोप लगा रहे हैं। किसी की भावनाओं के साथ खेलना या उनका मजाक उड़ाना अनुचित है। वे सस्ती राजनीति खेलकर चुनावी दहलीज पार करने की कोशिश कर रहे हैं। नवीन बाबू को चुनाव प्रचार में आना चाहिए और अपनी सरकार की उपलब्धता का प्रदर्शन करना चाहिए। प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने विपक्षी दलों को सकारात्मक राजनीति करने की सलाह दी है।

हम नुआपाड़ा में एक सकारात्मक और वैचारिक लड़ाई लड़ रहे हैं। हम नुआपाड़ा के लोगों से जो कहा है, उसे हम निश्चित रूप से पूरा करेंगे। ओडिशा में डबल इंजन सरकार बनने के बाद, ओडिशा के लोगों का भाजपा पर विश्वास बढ़ा है नुआपाड़ा जिले को नंबर वन जिला बनाने का दावा करते हुए, प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने नुआपाड़ा के लोगों से भाजपा उम्मीदवार श्री जय दोलकिया को भारी संख्या में वोट देने और उन्हें पंच पुरस्कार से सम्मानित करने की अपील की है। इस अवसर पर, ओडिशा जनता दल के उम्मीदवार श्री सुखधर दंडसेना ने भाजपा में शामिल होकर भाजपा उम्मीदवार श्री जय दोलकिया के प्रति अपना खुला समर्थन व्यक्त किया। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री बसंत पांडा, स्थानीय सांसद श्रीमती मालविका देवी, वरिष्ठ विधायक श्री जयनारायण मिश्रा, वरिष्ठ नेता यदुमणि पाणिग्रही, प्रसन्ना पांडी, खाम सिंह माझी, डॉ. सोनिया जैन, जिला अध्यक्ष कमलेश दीक्षित, प्रदेश प्रवक्ता मानस बख्शी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

## नीलाचल सारस्वत संघ, बडम्बा शाखा संघ की 54वीं वर्षगांठ

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

बडम्बा/भुवनेश्वर : नीलाचल सारस्वत संघ पुरी के श्रेष्ठतम बडम्बा शाखा संघ के श्री श्री ठाकुर निगमानंद परमहंस देव की 54वीं वर्षगांठ बडम्बा रिश्ता निगम निकेतन में आयोजित की गई। यह कार्यक्रम संघ के अध्यक्ष एवं कटक रिश्ते के केंद्रीय प्रतिनिधि डॉ. गौरांग चंद्र मोहंती के संरक्षण और बडम्बा शाखा संघ के अध्यक्ष प्रसन्न कुमार पांडा के समन्वय में आयोजित किया गया। कटक, अथाबढ़, नरीसंपुर, टेंकनाल, गोपालपुर, जगन्नाथपुर, केरुनिया आदि शाखा संघों के 400 से अधिक भाई-बहनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और श्री श्री ठाकुर निगमानंद सरस्वती देव के गुणों और भाग्यदा प्रसन्न पर चर्चा में भाग लेकर प्रसन्न हुए। शनिवार को कार्यक्रम के बाद, स्थानीय निवासियों की एक बैठक आयोजित की गई। रविवार सुबह 5 बजे सोलहवां उपहार पूजा समारोह शुरू हुआ। उसके बाद प्रायश्चा, वंदना और वर्षा जैसे अनुष्ठान किए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता बडम्बा शाखा के प्रमुख कुमार आचार्य ने की और बडम्बा शाखा की ओर से, बडम्बा मोहन सुबुद्धि मल्लिकार्जुन के 1-2 कला, दिवान और वीणाचं ने सटीक स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को हर साल की तरह इस वर्ष भी सम्मानित किया गया। समारोह में स्थानीय क्षेत्र के वरिष्ठ वकील कृष्ण मोहन मिश्र, सनात्रसेवी शिव नारायण मिश्र, शिखर रमेश चंद्र बेहरा, पत्रकार नायाधर मल्लिक, देव राय पट्टशाली, युगत किशोर साहू और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ब्रह्मण्ड शाखा के अध्यक्ष नाथचंद्र चंद्र, टेंकनाल शाखा के वरिष्ठ सदस्य देवशीला मिश्रा उपस्थित थे। बडम्बा शाखा के पूर्व अध्यक्ष विनय कृष्ण मोहंती, पूर्व संचालक पूर्ण चंद्र नायक, वरुणेश सांभव, प्रफुल्ल कुमार आचार्य, पितोवना साहू, प्रियवंत नायक, मितोवना दास सहित सभी भाई-बहनों ने कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग किया।



## क्या गम्हरिया अनाज गोदाम के मृतकों का जीवन्त करवा रहा भ्रष्ट राशन डीलरों को निलंबन मुक्त ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला, इसमें दो राय नहीं कि एक अतीत का संपन्न प्रिन्स ली स्टेट सरायकेला खरसावां जिले के अधिकांश ग्रामीण आज भूखे रखे जाते हैं, अगर वे भूखे नहीं होते तो ये सरकारी राशन आपूर्ति विभाग के गोदामों में बार बार आग लगते और गरीब उपभोक्ताओं के पेट - चेहरे यूँ धंसे क्यों होते ? अब गम्हरिया सरकारी अनाज गोदाम में अनाज संग दो कर्मचारियों का जल जाने से मामला ज्यादा कुछ पेचिदा अवश्य हुआ है। हद तो तब हो जाती है जब संभवतः जल कर मरे लोगों की प्रेतात्माएं भ्रष्टाचार के आगोश में डूबा इस विभाग में वर्षों से अनियमितता कारणवश रद्द अनुज्ञप्ति धारियों को पुनः बहाल करा रहा है ! ऐसे ही कुछ आश्चर्यजनक रोमांचकारी कार्य अब देखने को मिल रहा है सरायकेला खरसावां जिला के आपूर्ति विभाग में निलंबित दुकानों को निलंबन मुक्त कराया जाना। जी हाँ चौकिए मत हो जाइए सच्चाई जानने में। कुछ ऐसा ही माजरा रहा है सरायकेला खरसावां जिला आपूर्ति विभाग का अब। यहाँ अनाज घोटाला विगत कितने दशकों से निर्विरोध चलता आ रहा यह संभवतः भगवान को भी नहीं मालूम। पर पढ़ें के पीछे की सच्चाई लगभग जिले के सब लोग कम ज्यादा अवश्य जान रहे हैं। आज परिणाम यह है कि जब समुचा विभाग



गम्हरिया गोडाउन अग्नीकंड के कारण हतप्रभ हैं, एन वक्त पर कुछ ऐसे राशन डीलर भी हैं जिनकी अनुज्ञप्ति वर्षों पूर्व इसलिए रद्द कर दी गयी थी उठाये गये राशन गरीब लाभकों तक पहुंच ही नहीं था जो बड़ा भ्रष्टाचार था विभाग का। इसी बीच अब कुछ को निलंबन मुक्त कर दिया गया। इनमें राशन डीलर मंगला मूर्धू अनुज्ञप्ति संख्या 2/04, राजनगर प्रखंड, बुद्धेश्वर - अनुज्ञप्ति संख्या 21/03, राजनगर प्रखंड, मां जगन्नाथी महिला मंडल - अनुज्ञप्ति संख्या - 24/04 राजनगर, शीलत भूमिज, अनुज्ञप्ति

संख्या 5/95, सुखराम टूडू गम्हरिया आदि शामिल हैं। ये सभी अनुज्ञप्ति विगत 30 अक्टूबर 2025 को निलंबन मुक्त कराये गये हैं। इन डीलरों के पास अनाज का बड़ा स्टोक था वह गन्ना कहां निलंबन मुक्त कराने पूर्व कहीं दर्शाया नहीं जाना बड़ा संदेहास्पद विषय है। अगर कहीं पर समायोजन कराया गया तो फिर उसी क्षण क्यों विलम्ब समाप्त नहीं कराया गया। किसने उसे क्लिन चिट किया, यह बड़ा जांच का विषय बना हुआ है। आखिर मृतकों जीन् यह सब करना रहा है तो किनके बात पर यह सब हो रहा है !!

इधर अब विगत माह तीस तारीख को इन अनुज्ञप्ति धारियों के सारे दोष माफ करते हुए पुन निलंबन मुक्त कर साफ सुथरा दिखाया जाना कहाँ तक उचित है ? आखिर इस काम को कराने वाला कौन ? क्या मृतक अभिषेक हाजरा या डी एस डी का जीन् आकर ये काम करवा रहा है प्रशासन से जो गोदाम में जलकर मरे हैं। आखिर कौन हो सकता है पढ़ें के पीछे अनियमितता, भ्रष्टाचार से गरीबों के भूखे पेट से जुड़ा विभाग को चलाने वाला ? अब तो सीबीआई जैसी उच्चस्तरीय जांच एजेंसी ही इसका इलाज कर सकता।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18, 19, 20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली - 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होगा। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023



# 'नुआपाड़ा का संतुलित और समग्र विकास सिर्फ वादा नहीं, यह हमारी प्रतिबद्धता है': मनमोहन सामल

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा

नुआपाड़ा/भुवनेश्वर, : नुआपाड़ा उपचुनाव कठिन परिस्थितियों में होने जा रहा है। इस महीने की 11 तारीख को नुआपाड़ा की जनता अपने विधायक का चुनाव करेगी। आज चुनाव प्रचार थम रहा है और 14 तारीख को नतीजे घोषित किए जाएंगे। उपचुनाव को लेकर नुआपाड़ा की जनता में काफी उत्साह है। प्रदेश अध्यक्ष श्री मनमोहन सामल ने चुनाव प्रचार प्रक्रिया के शांतिपूर्ण और स्वस्थ वातावरण में संपन्न होने पर सभी मतदाताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया है। नुआपाड़ा जिला कार्यालय में आयोजित एक प्रस वार्ता में श्री सामल ने कहा कि 'नुआपाड़ा का संतुलित और समग्र विकास सिर्फ वादा नहीं, यह हमारी प्रतिबद्धता है'। पिछले आम चुनावों में ओडिशा की जनता ने भाजपा को 21 से 20 सांसद सीटें दीं, वहीं राज्य में पहली बार अकेले सरकार बनाने का अवसर दिया है। हमने जो 21 चुनावी वादे किए थे, उनमें से 11 को पूरा करने में हम सफल हुए हैं। बाकी वादे भी हम जल्द ही पूरे करेंगे। हमने जो कहा है, उसे पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं। नुआपाड़ा क्षेत्र की 75 हजार माताओं-बहनों को सुभद्रा योजना का लाभ मिला है, वहीं 45 हजार से अधिक किसान परिवारों को प्रति किंवाट धान पर 3100 रुपये दिए जा रहे हैं। वृद्धावस्था और दिव्यांग भूता के रूप में 3500 रुपये दिए जा रहे हैं। राज्य में 15 लाख हेक्टेयर चाय भूमि की सिंचाई का लक्ष्य रखा गया है और अकेले नुआपाड़ा के लिए 800 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

खरियार रोड को नगरपालिका और कोमना को एनएसी घोषित किया गया है, जबकि कोमना में उप-पंजीयक कार्यालय खोला गया है। नुआपाड़ा के लिए 1421 करोड़ रुपये की घोषणा की गई है, जिसमें पर्यटन, सिंचाई आदि पर जोर दिया गया है। नुआपाड़ा को मछली पालन का केंद्र बनाया जाएगा और इसके लिए एक मत्स्य महाविद्यालय स्थापित किया जाएगा। नुआपाड़ा रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन में तब्दील किया जाएगा। बरगढ़-नुआपाड़ा रेलवे परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण अंतिम चरण में है। जिले में कृषि आधारित उद्योगों को प्राथमिकता दी जाएगी। सुनाबेड़ा में औषधीय वृक्षों के रोपण को प्राथमिकता दी जाएगी। खरियार मार्ग पर एक आधुनिक अटल बस स्टैंड बनाया जा रहा है। एक खेल परिसर का निर्माण किया जा रहा है। यात्रियों की सुविधा को प्राथमिकता देते हुए एक आरओबी (रेल ओवर ब्रिज) स्थापित किया जा रहा है, श्री सामल ने कहा।

यूएन को जिए 7 मार्च 2009 को क्या हुआ था। वह व्यक्ति कौन है जिसने इन शब्दों का इस्तेमाल किया था? 2009 में, बीजद ने अत्याचार किए। पूरा राज्य जानता है कि राज्य के लोग अत्याचारों के दोषी हैं। सकारात्मक राजनीति करने के बजाय, बीजद श्रेयस्त्रोह और चोरी-चुराई जैसे घटिया शब्द कहकर मुख्य मुद्दे से बच रही है। कांग्रेस और बीजद दोनों पार्टियाँ, जो 75 वर्षों से अधिक समय से सत्ता में हैं, उन्हें आत्मचिंतन करना चाहिए कि उन्होंने नुआपाड़ा के लोगों के लिए क्या किया है

और आम जनता के सामने इसका हिसाब देना चाहिए। ऐसा करने के बजाय, वे गुमराह करने के लिए भाजपा और व्यक्तियों पर आधारित सस्ते आरोप लगा रहे हैं। किसी की भावनाओं के साथ खेलना या उनका मजाक उड़ाना अनुचित है। वे सस्ती राजनीति खेलकर चुनावी दहलीज पार करने की कोशिश कर रहे हैं। नवीन बाबू को चुनाव प्रचार में आना चाहिए और अपनी सरकार की उपलब्धता का प्रदर्शन करना चाहिए। प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने विपक्षी दलों को सकारात्मक राजनीति करने की सलाह दी है।

हम नुआपाड़ा में एक सकारात्मक और वैचारिक लड़ाई लड़ रहे हैं। हम नुआपाड़ा के लोगों से जो कहा है, उसे हम निश्चित रूप से पूरा करेंगे। ओडिशा में डबल इंजन सरकार बनने के बाद, ओडिशा के लोगों का भाजपा पर विश्वास बढ़ा है नुआपाड़ा जिले को नंबर वन जिला बनाने का दावा करते हुए, प्रदेश अध्यक्ष श्री सामल ने नुआपाड़ा के लोगों से भाजपा उम्मीदवार श्री जय दोलकिया को भारी संख्या में वोट देने और उन्हें पंच पुरस्कार से सम्मानित करने की अपील की है। इस अवसर पर, ओडिशा जनता दल के उम्मीदवार श्री सुखधर दंडसेना ने भाजपा में शामिल होकर भाजपा उम्मीदवार श्री जय दोलकिया के प्रति अपना खुला समर्थन व्यक्त किया। इस प्रेस कॉन्फ्रेंस में वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री बसंत पांडा, स्थानीय सांसद श्रीमती मालविका देवी, वरिष्ठ विधायक श्री जयनारायण मिश्रा, वरिष्ठ नेता यदुमणि पाणिग्रही, प्रसन्ना पांडी, खाम सिंह माझी, डॉ. सोनिया जैन, जिला अध्यक्ष कमलेश दीक्षित, प्रदेश प्रवक्ता मानस बख्शी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

## प्रसिद्ध साहित्यकार, लेखक कवि डॉ. रमेश पोखरियाल को पंडित तिलकराज शर्मा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित

पुरस्कार में 1लाख एक हजार की राशि, अंगवस्त्र, सम्मान पत्र प्रदान की

डॉ. शंभू पवार नई दिल्ली। सुप्रसिद्ध साहित्यकार, लेखक, कवि एवं पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल को स्व. पंडित तिलकराज शर्मा स्मृति में विश्व शांति पुरस्कार (सम्मान राशि 1 लाख 1 हजार रुपए) से सम्मानित किया गया।



देहरादून स्थित भारत के प्रथम लेखक गांव में आयोजित तीन दिवसीय स्पर्श हिमालय महोत्सव में एक भव्य समारोह में ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रख्यात समाजसेवी, दानवीर, कर्मयोगी, उद्यमी अमेरिका प्रवासी डॉक्टर इंद्रजीत शर्मा ने प्रसिद्ध साहित्यकार, कवि डॉ. रमेश पोखरियाल को स्व. पंडित तिलकराज शर्मा की स्मृति में प्रति वर्ष दिए जाने वाले विश्व शांति पुरस्कार से सम्मानित किया। पुरस्कार स्वरूप अंग वस्त्र, सम्मान पत्र और एक लाख एक हजार की राशि प्रदान की गई इस अवसर पर डॉ. योगेंद्र नारायण (पूर्व रक्षा सचिव भारत सरकार), पदमश्री डॉ. हरमोहिंदर सिंह बेदी (कुलपति हिमाचल विश्वविद्यालय), लेफ्टिनेंट जनरल अनिल कुमार भट्ट, श्रीमती विदुशी निशंक, (निदेशक लेखकों), आरुषि निशंक, (अभिनेत्री एवं फिल्म निर्माता) सहित बड़ी संख्या में विद्वान,

शिक्षाविद्, साहित्यकार उपस्थित थे। आपको बता दे कि महान समाजसेवी स्व. पंडित तिलकराज शर्मा के पद चिन्हों पर चलते हुवे उनके सुपुत्र एवं ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत शर्मा गत दो दशक से सामाजिक समरसता एवं उत्थान, नारी सशक्तिकरण, पर्यावरण, हिंदी रक्षा और साहित्य के उन्नयन एवं संवर्द्धन के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। डॉ. इंद्रजीत शर्मा ने ट्रस्ट द्वारा गत 11 वर्ष में दुनिया के एक लाख से अधिक विशिष्ट जनों को सम्मानित किया गया है। (सम्मान पाने वालों में पद्यशी, पदम भूषण से सम्मानित विशिष्ट शख्सियतों के साथ साथ



## रेलकोच रेस्टोरेंट का उद्घाटन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओडिशा मुनिगुडा/भुवनेश्वर : यात्रियों को 24 घंटे अच्छी गुणवत्ता वाला भोजन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से, रेलवे विभाग ने मुनिगुडा अमृत भारत रेलवे स्टेशन पर रेलकोच रेस्टोरेंट का उद्घाटन किया। इस उद्घाटन समारोह में विस्मकटक विधायक नीलमाधव हिक्का मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। संबलपुर मंडल में तीसरे रेस्टोरेंट के

रूप में इस रेलकोच रेस्टोरेंट का उद्घाटन किया गया है और यह बेहतर सेवा पारदर्शिता प्रदान करेगा। विधायक ने कहा कि मुनिगुडा, कंधमाल, रायगडा और कालाहांडी जिलों के अधिकांश लोग इस रेलवे स्टेशन पर निर्भर हैं और यह लोगों को जरूरतों को पूरा करेगा। रेलवे एडीएन ने कहा कि चूँकि मुनिगुडा अमृत भारत स्टेशन में शामिल है, इसलिए इस रेलकोच की सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। उद्घाटन समारोह में रेस्टोरेंट के मालिक नरेंद्र पात्रा, धर्मेन्द्र पात्रा, महेंद्र पात्रा और उनके सभी रिश्तेदार उपस्थित थे।

## आन्दोलनकारी परिवार को "बैल" कहना अपमान जनक : चंपाई

मीडिया से बात रखते फफककर रो पड़े पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



सरायकेला घाटशिला उपचुनाव के प्रचार के अंतिम दिन भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन के जो प्रचार हुआ था लोगों के दिलों में राज करे वाला था। भाजपा प्रत्याशी बाबूलाल सोरेन के पिता और पूर्व मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन आज कुछ भावुक हो उठे। उन्होंने कहा कि झारखंड आंदोलनकारी परिवार को "बैल" कहना बेहद अपमानजनक है। उन्होंने कहा कि ये टिप्पणी झामुो सरकार की आदिवासी विरोधी मानसिकता को उजागर करती है। उन्होंने सवाल उठाया कि "सरकार बताए कि उसने अब तक आदिवासियों, किसानों और

कुचलने का काम किया है। आंदोलनकारियों पर की गई लाठीचार्ज को उन्होंने "शर्मनाक" बताया और कहा कि इससे यह साबित होता है कि सरकार को न तो झारखंड की जनता की भावनाओं को परवाह है और न ही आंदोलनकारियों के संघर्ष का सम्मान। चंपाई सोरेन ने यह भी स्पष्ट किया कि उन्होंने कभी अपने बेटे बाबूलाल सोरेन को टिकट दिलाने के लिए पार्टी पर दबाव नहीं डाला। उन्होंने कहा, "जनता सब जानती है।

## पत्रकार सुरक्षा कानून की माँग तेज — झारखंड में प्रस्ताव पेश करने की अपील

वहीदा बशीर

धनबाद। पत्रकारों की सुरक्षा और अधिकारों को लेकर आज आयोजित एक समीक्षात्मक बैठक में झारखंड सहित पूरे देश में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू करने की माँग जोरदार तरीके से उठी। बैठक में कहा गया कि कई राज्यों की तर्ज पर झारखंड विधानसभा में भी पत्रकार सुरक्षा कानून विधेयक पेश किया जाए तथा पत्रकार कल्याण कोष की स्थापना की जाए। वक्ताओं ने सुझाव दिया कि पत्रकार एवं पत्रकारिता संस्थान अधिनियम 2017 के अंतर्गत राज्य में पत्रकारों पर होने वाली हिंसा रोकने के लिए अलग विधेयक पारित किया जाए। साथ ही पत्रकारों पर एफआईआर दर्ज करने से पहले उच्च स्तरीय जांच का प्रावधान सुनिश्चित करने की भी माँग की गई।



प्रतिनिधियों ने पत्रकारों के लिए स्वास्थ बीमा, आवास, चिकित्सा और पेंशन सुविधा को व्यवस्था करने तथा पत्रकारों पर हमले करने वालों को कड़ी सजा देने की माँग की। बैठक में यह भी कहा गया कि पत्रकार देश का चौथा स्तंभ हैं, इसलिए उनकी स्वतंत्रता और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

